न्यूज़ीलैंड की हिंदी पत्रकारिता का इतिहास



रोहित कुमार 'हैप्पी'

ISBN : 978-0-473-50958-3 (Softcover)
ISBN : 978-0-473-50960-6 (PDF)
ISBN : 978-0-473-50962-0 (Epub)

भारत-दर्शन प्रकाशन, न्यूज़ीलैंड (Bharat-Darshan, New Zealand)
2/156, Universal Drive, Henderson -0610, Auckland (New Zealand)
फोन:0064-9-837 7052
फ़ैक्स : 0064-9-837 3285
वैबसाइट: https://www.bharatdarshan.co.nz
ई-मेल: editor@bharatdarshan.co.nz
प्रथम संस्करण : जनवरी 2020

मोबाइल पर ई-बुक पढ़ने के लिए नीचे दिए QR Code का उपयोग करें:

समर्पण

‘कथ्य’ सरल सुलभ हैं, ‘तथ्य’ खोजने पड़ते हैं लेकिन शोध ‘तथ्य’ पर आधारित होता है, ‘कथ्य’ पर नहीं। ‘कथ्यों’ को सत्य की कसौटी पर परखकर तथ्य उजागर करना किसी भी शोधार्थी और खोजी पत्रकार का कर्तव्य होता है।

आवश्यक नहीं कि जो दिखायी देता हो, वह यथार्थ हो और यह भी सदैव नहीं होता कि यथार्थ सरलता से दिखायी पड़े।

हमने न्यूज़ीलैंड का 1930 से वर्तमान तक का हिंदी पत्रकारिता का इतिहास प्रस्तुत किया है। शोध और खोजी पत्रकारिता का उद्देश्य तथ्यों के आधार पर सत्य उजागर करना मात्र होता है, किसी को लाभ-हानि पहुंचाना नहीं। यथा अपने भरसक प्रयास के बावजूद यदि कोई पहलू, व्यक्ति-विशेष या संस्था सम्मिलित न किए जा सके हों तो भी हिंदी के प्रति उनकी श्रद्धा में किंचित भी संदेह नहीं।

आपसे यह भी विनम्र अनुरोध है कि यदि आपके पास न्यूज़ीलैंड में हिंदी पत्रकारिता पर कोई विशेष जानकारी है तो आप इसपर हो रहे शोध में सहयोग करके भागीदार बनें।

-रोहित कुमार ‘हैप्पी’

क्रम

न्यूज़ीलैंड एक परिचय

न्यूज़ीलैंड या आओटियारोआ (Aotearoa - न्यूज़ीलैंड का माओरी नाम) दक्षिण प्रशान्त महासागर में ऑस्ट्रेलिया के 2000 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल 269,000 वर्ग किलोमीटर है। यह क्षेत्रफल व आकार की दृष्टि से जापान से कुछ छोटा व ब्रिटेन से थोड़ा सा बड़ा कहा जा सकता है। न्यूज़ीलैंड की राजधानी वैलिंग्टन है तथा सबसे बड़ा शहर ऑकलैंड है। ऑकलैंड न्यूज़ीलैंड की वाणिज्य राजधानी है। न्यूज़ीलैंड तेजी से बहु-संस्कृति समाज (Multi-cultural Society) के रूप में परिवर्तित होता जा रहा है।

लगभग साढ़े 49 लाख की जनसंख्या वाले न्यूज़ीलैंड में अँग्रेज़ी और माओरी न्यूज़ीलैंड की आधिकारिक भाषाएं है। यहाँ सामान्यतः अँग्रेज़ी का उपयोग किया जाता है। यद्यपि अंग्रेजी न्यूजीलैंड में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है तथापि माओरी और न्यूजीलैंड सांकेतिक भाषा दोनों को औपचारिक रूप से न्यूजीलैंड की आधिकारिक भाषाओं के रूप में संवैधानिक तौर पर विशेष दर्जा प्राप्त है। यहाँ के निवासियों को किसी भी कानूनी कार्यवाही में माओरी और न्यूजीलैंड सांकेतिक भाषा का उपयोग करने का अधिकार है।

2018 की जनगणना के अनुसार यहाँ भारतीयों की कुल जनसंख्या 2,25,414 है। जनसंख्या की दृष्टि से न्यूज़ीलैंड यूरोपीयन (64.1 प्रतिशत), माओरी (16.5 प्रतिशत), चीनी (4.9 प्रतिशत) समुदाय के पश्चात भारतीय (4.7 प्रतिशत) चौथा बड़ा समुदाय है।

हिंदी न्यूज़ीलैंड में सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषाओं में पांचवें स्थान पर है, जबकि

2013 की जनगणना में इसका स्थान चौथा था। इस समय अँग्रेज़ी, माओरी, सामोअन व चीनी भाषा के बाद हिंदी सर्वाधिक बोले/समझे जाने वाली भाषा है। 2018 की जनगणना के अनुसार 69,471 लोग हिंदी का उपयोग करते हैं।

	भाषा	उपयोगकर्ता	प्रतिशत
1	अंग्रेज़ी	4,482,135	95.4
2	माओरी	185,955	4.0
3	सामोअन	101,937	2.2
4	उत्तरी चीनी	95,253	2.0
5	हिंदी	69,471	1.5

न्यूज़ीलैंड जनगणना 2018 में सर्वाधिक बोले जानी वाली शीर्षस्थ 5 भाषाएं

साढ़े 49 लाख की जनसंख्या वाला यह छोटा-सा देश हिंदी के मानचित्र पर अपनी विशेष पहचान रखता है। न्यूज़ीलैंड ने हिंदी जगत को **इंटरनेट पर विश्व की पहली पत्रिका** देकर हिंदी वैब पत्रकारिता में अपना नेतृत्व स्थापित किया। जहां तक प्रवासी भारतीयों का संबंध है तो पंजाब और गुजरात के भारतीय न्यूज़ीलैंड में बहुत पहले से बसे हुए हैं किन्तु 1990 के आसपास बहुत से लोग मुम्बई, देहली, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, हरियाणा इत्यादि राज्यों से आकर यहाँ बस गए। फीजी से भी बहुत से भारतीय राजनैतिक तख्ता-पलट के दौरान यहाँ आ बसे। यद्यपि फीजी मूल के भारतवंशी मूल रुप से हिंदी न बोलकर हिंदुस्तानी बोलते हैं तथापि यथासंभव अपनी भाषा का ही उपयोग करते हैं। उल्लेखनीय है कि फीजी में गुजराती, मलयाली, तमिल,

बांग्ला, पंजाबी और हिंदी भाषी सभी भारतवंशी लोग हिंदी के माध्यम से ही जुड़े हुए हैं। न्यूज़ीलैंड में फीजी भारतीयों की अनेक रामायण मंडलियां सक्रिय हैं।

इस छोटे से देश में 'न्यूज़ीलैंड' में हिंदी का इतिहास बहुत पुराना है। न्यूज़ीलैंड में लेखन का पहला साक्ष्य 1930 में मिलता है। 1930 में भारत की सुप्रसिद्ध पत्रिका, 'विशाल भारत' में न्यूज़ीलैंड के लेखक का आलेख प्रकाशित है। ऑकलैंड में 1945 के आसपास पंडित अमीचन्द ने हिंदी की कक्षाएँ आरंभ की थी। यह न्यूज़ीलैंड में भाषा शिक्षण का सबसे पहला विद्यालय था। इसके बाद ही 'द ऑकलैंड इंडियन एसोसिएशन' ने 1955 में गुजराती स्कूल आरंभ किया। न्यूज़ीलैंड में हर सप्ताह कोई न कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम होता है। हर सप्ताह हिंदी फिल्में प्रदर्शित होती हैं।

न्यूज़ीलैंड में भारतीय पत्रकारिता का युग

न्यूजीलैंड की हिंदी पत्रकारिता पर चर्चा करने से पहले आवश्यक होगा कि हम न्यूजीलैंड की समूची पत्रकारिता से परिचित हों ताकि हमें हिंदी पत्रकारिता की पृष्ठभूमि का ज्ञान हो। यूँ तो न्यूजीलैंड की भारतीय पत्रकारिता का इतिहास पुराना है। भारतीय पत्रकारिता की बात करें तो सबसे पहला प्रकाशित पत्र था 'आर्योदय' जिसके संपादक थे, 'जे के नातली', उप संपादक थे, 'पी वी पटेल' व प्रकाशक थे 'रणछोड़ क़े पटेल'। भारतीयों का यह पहला पत्र 1921 में प्रकाशित हुआ था परन्तु यह जल्दी ही बंद हो गया। यह पत्र गुजराती में था। एक बार फिर 1935 में 'उदय' नामक पत्रिका श्री प्रभु पटेल के संपादन में आरम्भ हुई जिसका सह-संपादन किया था कुशल मधु ने। पहले पत्र की भांति इस पत्रिका को भी भारतीय समाज का अधिक सहयोग नहीं मिला और पत्रिका को बंद कर देना पड़ा।

उपरोक्त दो प्रकाशनों के पश्चात लम्बे अंतराल तक किसी पत्र-पत्रिका का प्रकाशन नहीं हुआ। 90 के दशक में पुनः अंग्रेज़ी में 'संदेश' नामक एक पत्र प्रकाशित हुआ

व कुछ अंकों के प्रकाशन के बाद बंद हो गया। इसके बाद 'द इंडियन टाइम्स', 'इंडियन पोस्ट', 'पेस्फिक स्टार', 'इस्टएंडर' और 'द फीजी-इंडिया एक्सप्रैस' का प्रकाशन हुआ किन्तु एक के बाद एक बंद हो गए। यह सभी पत्र अँग्रेज़ी में थे।

वर्तमान में 'इंडियन न्यूज़लिंक' व 'इंडियन वीकएंडर' अँग्रेजी में प्रकाशित हो रहे हैं।

हिंदी पत्रकारिता

नब्बे के दशक में न्यूज़ीलैंड में हिंदी पढ़ने वाले लोग तो थे लेकिन कोई हिंदी का प्रकाशन नहीं था। भारतीय संस्कृति, भाषा व साहित्य को प्रचारित-प्रसारित करने का कोई सुदृढ़ माध्यम भी नहीं था। इसी को देखते हुए एक हिंदी पत्रिका के प्रकाशन की योजना अंकुरित हुई। विदेश में हिंदी का प्रकाशन लगभग असंभव था। नब्बे के दशक के आरंभिक दौर में कई स्थानीय प्रिंटर ऐसे प्रकाशन के लिए अपनी असमर्थता जता चुके थे। हाँ, हस्तलिखित सामग्री का 'ऑफसेट प्रिंटिंग' में प्रकाशन संभव था लेकिन बहुत सरल न था।

न्यूजीलैंड की हिंदी पत्रकारिता का अध्याय 1996 में 'भारत-दर्शन' पत्रिका के प्रकाशन से आरम्भ माना जाएगा। 1921 से 90 तक के दशक की 'न्यूजीलैंड भारतीय पत्रकारिता' के इतिहास का गहन अध्ययन करने के पश्चात पुनः एक हिंदी लेखक व पत्रकार ने 'भारत-दर्शन' पत्रिका के प्रकाशन व संपादन का बीड़ा उठाया। हिंदी भाषा का प्रेम व भारतीय समाज की आवश्यकताओं हेतु एक नन्ही सी पत्रिका का जन्म हुआ जो शीघ्र ही विश्व-पटल पर 'हिंदी पत्रकारिता' का नया इतिहास रचने वाली थी। बिना किसी सरकारी या गैर-सरकारी आर्थिक सहायता के पत्रिका का प्रकाशन यदि असंभव नहीं, तो कठिन अवश्य है लेकिन हिंदी प्रेमियों के स्नेह ने हर दिन नई ऊर्जा प्रदान की।

इधर कम्प्यूटर पर काम करना लोकप्रिय होने लगा था। कम्प्यूटर पर हिंदी टंकण की संभावनाएं तलाशी गई। भारत से कुछ हिंदी फॉन्ट लाए गए जिनमें न्यू देहली, सूर्या, नारद इत्यादि सम्मिलित थे। ये फॉन्ट आजकल वाले सरल-सुलभ फॉन्ट न होकर 'पोस्टस्क्रिप्ट फॉन्ट' थे जिसके लिए एक विशेष फॉन्ट मैनेजर की आवश्यकता होती थी और फॉन्ट को स्थापित/प्रतिष्ठित (इंस्टाल) करना भी एक काम था। सो 'हिंदी फॉन्ट' की बड़ी समस्या रहती थी। अब विंडोज 3.1 ऑपरेटिंग सिस्टम पर फॉन्ट इंस्टाल हो गए और टंकण पर हाथ भी आजमा लिए गए। पत्रिका हेतु न्यूज़ीलैंड की नेशनल लायब्रेरी से आईएसएसएन ले लिया गया। 'डिजिटल प्रिंटिंग' आरंभ होने से प्रिंटिंग की समस्या किसी हद तक हल हो गई। पत्रिका को कम्प्यूटर पर तैयार कर मुद्रण हेतु भेज दिया गया। 1996 में भारत-दर्शन का प्रथम मुद्रित संस्करण प्रकाशित होकर आया और इसके पहले अंक से ही आईएसएसएन 1173-9843 पत्रिका के मुखपृष्ठ पर प्रकाशित कर दिया गया। भारत-दर्शन का मुद्रण भी पारम्परिक 'ऑफसेट प्रिंटिंग' न होकर 'डिजिटल' था। पहला अंक ए 5 के आकार का, 'श्वेत-श्याम' (Black on White) व 8 पृष्ठ का था।


भारत-दर्शन

Oct-Nov 1996 ISSN 1173-9843

FREE ISSUE

Inside: English Pages
News
Literature

1996 में प्रकाशित भारत-दर्शन का पहला अँक

पत्रिका तैयार होकर आ गई और पत्रिका को सभी मुख्य भारतीय दुकानों व संस्थाओं के माध्यम से वितरित किया गया। इसके अतिरिक्त समारोहों व साप्ताहिक मंडियों में जाकर इसे व्यक्तिगत रूप से बांटा गया। पत्रिका निशुल्क थी।

यह भी ध्यान रखा गया कि पत्रिका अधिक से अधिक पाठकों तक पहुंच सके और इसके लिए एक रोचक युक्ति का उपयोग किया गया। पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर बड़े शब्दों में प्रकाशित किया गया था -

“कृपया इस पत्रिका को पढ़ने के बाद फेंके नहीं बल्कि किसी और हिंदी प्रेमी को पढ़ने को दे दें। पत्रिका के प्रचार-प्रसार में आपके योगदान के लिए आभार!”

भारत-दर्शन आरंभ करने से पहले ‘रोहित कुमार’ ने ‘द इंडियन टाइम्स’ पत्र (जोकि अंग्रेजी में होता था) में रहते हुए उसमें ‘हस्तलिखित’ हिंदी पन्ने’ आरंभ किए।

इस पत्र का प्रकाशन व संपादन आफ़िफ शाह करते थे बाद में यह पत्र ‘कुंअर सिंह’ ने सँभाल लिया।

न्यूजीलैंड भारतीय पत्रकारिता में हिंदी प्रकाशन का अध्याय आंशिक रूप से ‘द इंडियन टाइम्स’ में 1992 में हस्तलिखित हिंदी रिर्पोटों के प्रकाशन से आरम्भ होता है, तथापि वास्तविक हिंदी प्रकाशन का श्रेय 'भारत-दर्शन' पत्रिका को जाता है चूंकि यही पत्रिका पूर्ण रूप से न्यूजीलैंड का पहला हिंदी प्रकाशन कहा जा सकता है। ‘द इंडियन टाइम्स’ में हस्तलिखित हिंदी का आरम्भ भी इन्हीं पंक्तियों के लेखक ने ही किया था और बाद में भारत-दर्शन का संपादन-प्रकाशन भी।

INDIAN TIMES — प्रस्तुति : रोहित कुमार /**Hindi**

न्यूजीलैंड में पहला कवि सम्मेलन व मुशायरा

8, अगस्त, 1993 को सांय 7.30 से रात 11.00 बजे तक मॉऊंट रोस्कल वॉर मैमोरियल हाल, मेय रोड, ऑकलैंड में एक साहित्यक/सॉंस्कृतिक कार्यक्रम समपन्न हुआ। कवि सम्मेलन, संगीत-नृत्य व मुशायरा कार्यक्रम के मुख्य भाग थे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ संगीत व श्लोक-उच्चारण से हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री देवचंद महाराज, मुख्यमंत्री, पुरोहित ब्राह्मण महा-सभा ने की। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने अपनी संस्कृति व सभ्यता को कायम रखने पर बल दिया। न्युजीलैंड में हुए इस पहले कवि सम्मेलन व मुशायरे के आयोजन पर, कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री देवचंद महाराज ने आयोजकों को बधाई दी। तत्पश्चात श्री कुंवर सिंह, प्रकाशक द इंडियन टाइम्स ने दो शब्द कहे।

तत्पश्चात मंच संचालिका श्रीमती प्रतिमा सोमा ने रोहित कुमार को कवि सम्मेलन हेतु मंच संचालन का कार्यभार सौंप दिया। स्थानीय कवियों के अतिरिक्त भारत से पत्राचार द्वारा आई कविताओं को भी उनके नाम व उनके परिचयसहित पढ़ा गया। पढ़ी गई पहली रचना थी भारत से आई श्री विजय कुमार की रचना, नमूना देखिए:

बचकर रहना इस दुनियाँ के लोगों की परछाई से
इस दुनियाँ के लोग बना लेते हैं पर्वत राई से।

इसके बाद श्री राम कुमार सेवक ने फीजी के एक हिन्दी कवि की रचना पढ़ी:

पड़ गए छाले हाथों में
और कमरें टूट गई
दिन भर सड़ गए धूप में
सब नसें फूट गई।

श्रीमती प्रतिमा सोमा ने अपनी कुछ गुजराती कविताएं पढ़ी। तदपश्चात एक बार फिर सात समंदर पार के अपने देश भारत से आई एक रचना श्री अमृत लाल मदान की कविता 'परिवर्तन' को मंच-संचालक रोहित कुमार ने पढ़ा:

आवारा पिल्ला गली का इधर उधर उठता बैठता
जाने क्या-क्या कुँकुआता रहता
पूंछ दबाए मरियल टाँगों के बीच
जीवन की रहस्यमय पहेली सा
सोचता रहता है-- कि क्या कोई भी फर्क पड़ेगा
किसी भी स्थिति में किसी भी परिस्थिति में।

इसके बाद अपनी कुछ गुजराती व हिन्दी कविताओं को प्रस्तुत किया श्री अमृतभाई पेटल, चेयरमैन श्री हरे गिरधारी मंदिर ने। उनकी हिन्दी कविता के कुछ अंश प्रस्तुत है:

'उस खून को न भूलना
जो खून है हिन्दी का!
जो कुछ हमने किया है
सदियों से हम करते हैं
ये मजहब है हिन्दी का!'

और 'ना आँसू अंजली देना
कायर हम नहीं हैं
फूलों की अंजली देना
वो अंजली है हिन्दी की!'

इसके बाद श्री आनंद नायडू ने हिन्दी-उर्दू शायरी की। श्री आनंद नायडू ने चुनिंदा शायरों की शायरी पेश की। अंत में कवि सम्मेलन के संचालक रोहित कुमार की एक रचना:

'हर मानव दुखिया जग में कोई सुखी नहीं दिखता
फिर हम क्यों कोशिश भी करते अपना दर्द बताने की!'

और 'मिलते ही वो शुरू हो गए अपना दर्द सुनाने को
मेरी तो बारी ना आई अपनी बात बताने की!'

उसके बाद सॉंस्कृतिक नृत्य व संगीत का प्रदर्शन व गायन हुआ। उसके बाद मास्टर नफीस अख्तर, लेखक व गजलकार ने मुशायरे का संचालन शुरू किया। मुशायरे में भाग लिया जनाब नफीस अख्तर, बेगम फरहत इकबाल, जनाब मोहम्मद अज़ीम, जनाब अब्दुल खलील, जनाब याकूब भट्टी, श्रीमती माया स्टाऊर्ट व रोहित कुमार ने। भारत से आई डा॰ राणा प्रताप गन्नौरी की गजल को भी मुशायरे में पढ़ा गया। शुरूआत हुई बेगम फरहत इकबाल:

हमें हाथों में कोई कैद नहीं कर सकता
हम तो खुशबू हैं जिधर जाए महकते जाए।

उसके बाद भारत से आई गजल, डा॰ राणा प्रताप गन्नौरी की गजल रोहित कुमार ने पढ़ी। डा॰ राणा प्रताप गन्नौरी की गज़ल का नमूना देखिए:

'इतना बेहाल अपना हाल न कर
तंगदस्ती का कुछ मलाल न कर!'

और 'तेरी ताकत कलम की ताकत है
अपनी ताकत को कम ख्याल न कर!'

जनाब अब्दुल खलील ने तरन्नुम में गजल पेश की:

'कौन कहता है मुहब्बत की जुबां होती है
ये हकीकत तो आँखों से बयां होती है।'

इसके बाद श्रीमती माया ने अपने पिताजी की लिखी कुछ शायरी की। जनाब मोहम्मद अज़ीम जो पाकिस्तान से ताल्लुक रखते हैं ने एक उर्दू शायर की गज़ल पढ़ी और उसके बाद उनके कुछ शेरो ने माहौल ही बदल दिया। एक शेर जो उन्होंने यूं कहा:

"मम्मी तुम तो कह रही थी ईद तो कब की गई
फिर पड़ोसन से गले मिलते हैं पापा रोज क्यों!"

रोहित कुमार ने खुद की लिखी गज़ल पढ़ी:

"दुश्मनों से कह दो दीए तुम जलाओ
मैं मर रहा हूं तुम दीवाली मनाओ!"

'पेट भर रोटी ना तन पे कपड़ा
बाद मरने के ना मेरी अर्थी सजाओ।'

मुशायरा खत्म हुआ एक मशहूर गजल से जिसको तरन्नुम में गाया जनाब याकूब भट्टी ने। वक्त की कमी के कारण कुछ परेशानी आई मास्टर नफीस अख्तर खुद की लिखी हुई गज़ल नहीं पढ़ पाए। मास्टर नफीस अख्तर जिन्होंने मुशायरे का संचालन किया व सारे कार्यक्रम को आयोजित करने में विशेष भूमिका अदा की। उम्मीद है यहाँ के स्थानीय साहित्यकार पुन प्रयास करेंगे व उन सभी गलतियों को जो इस कार्यक्रम में रही अगले कार्यक्रमों में उनको मध्य रखते हुए सफल आयोजन करेंगें। अंत में श्री एम॰ सी॰ विनोद ने सभी का आभार प्रकट किया।

1992 में 'द इंडियन टाइम्स' में रोहित कुमार 'हैप्पी' की हस्तलिखित हिंदी रिपोर्ट

दूसरा अंक आते-आते पत्रिका अत्यंत लोकप्रिय हो चुकी थी। पाठक निरंतर और अधिक सामग्री का अनुरोध करने लगे थे। अतः पत्रिका में 4 और पृष्ठ जोड़े गए। अब पत्रिका का तीसरा अंक 12 पृष्ठ का था।

1997 में 'भारत-दर्शन' का इंटरनेट संस्करण उपलब्ध करवाया गया, इसके साथ ही पत्रिका को 'इंटरनेट पर विश्व की पहली हिंदी साहित्यिक पत्रिका' होने का गौरव प्राप्त हुआ और विश्वभर में फैले भारतीयों ने 'भारत-दर्शन' की हिंदी सेवा की सराहना की।

न्यूज़ीलैंड की हिंदी पत्रिकाएँ

भारत-दर्शन

पत्रिकाओं की बात करें तो हिंदी की इस यात्रा में भारत-दर्शन के साथ कई साथी पत्रिकाएँ आरंभ हुईं किन्तु वे अल्पजीवी ही रह पाईं।

भारत-दर्शन के पहले मुद्रित अंक के दो संस्करण निकले थे। पहला अंक निकलते ही हाथों-हाथ चला गया और इसकी मांग को देखकर इसी अंक का दूसरा संस्करण निकालना पड़ा।

पहले अंक का यह संस्करण अगस्त-सितंबर 1996 में प्रकाशित हुआ था लेकिन इसके पृष्ठ पर केवल अंक-1, वर्ष-1 प्रकाशित है। इस समय तक पत्रिका का आईएसएसएन (ISSN) भी नहीं आया था लेकिन इसी अंक के दूसरे संस्करण में महीने का नाम और आईएसएसएन (ISSN) भी मुद्रित है। यथा इसपर अंक-1 अक्टूबर-नवंबर वर्ष-1 ISSN 1173-9843 प्रकाशित है।



भारत-दर्शन

अच्छी पत्रिका सच्ची पत्रिका

अंक-१ वर्ष-१

संपादकीय

न्यूजीलैंड की भारतीय पत्रकारिता

यूं तो न्यूजीलैंड में अनेक पत्र-पत्रिकाएं समय-समय पर प्रकाशित होती रही है,सबसे पहला प्रकाशित पत्र था,'आर्योदय' जिसके संपादक थे श्री जे. के. नातली,उप संपादक थे श्री पी. वी. पटेल व प्रकाशक थे श्री रणछोड के. पटेल। भारतीयो का ये पहला पत्र १९२१ मे प्रकाशित हुआ था परंतु ये जल्दी ही बंद हो गया।

एक बार फिर १९३५ मे 'उदय' नामक पत्रिका श्री प्रभु पटेल के संपादन मे शुरू हुई जिसका सह-संपादन किया था कुशल मधु ने। परंतु पहली पत्रिका की तरह इस पत्रिका को भी भारतीय समाज का अधिक सहयोग न मिला और पत्रिका को बंद कर देना पडा।

फिर लंबे समय तक किसी पत्र-पत्रिका का प्रकाशन नही हुआ। ९० के दशक में पुन: संदेश नामक पत्र प्रकाशित हुआ व कुछ अंको के प्रकाशन के बाद बंद हो गया। उसके बाद क्रमश: द इंडियन टाईम्स, इंडियन पोस्ट,पेस्फिक स्टार व द ईस्टएंडर प्रकाशित हुए, इसके बाद अंतिम पत्र आया द फीजी-इंडिया एक्सप्रैस जिसका संपादन कर रहे है श्री खान।

९० के दशक मे आई इन पत्रिकाओ मे से अधिकतर बंद हो गई व कुछ अभी भी प्रकाशित हो रही है। १९२१ से लेकर अब तक का न्यूजीलैंड की भारतीय पत्रकारिता का इतिहास पढने व समझने के बाद पुन: एक लेखक व पत्रकार का प्रयास 'भारत-दर्शन' आपके समक्ष है। हिंदी भाषा के प्रेम व भारतीय समाज की जरूरत को समझते हुए मेरी नन्ही सी कलम का ये प्रयास 'भारत-दर्शन' आप सब पाठको को समर्पित!

इस अंक मे

लघु-कथाएं

गजले

नारी संसार

व

समाचार

मद्रास शहर का नया नाम

मद्रास का नाम चेन्नई रखने का विधेयक तमिलनाडु विधानसभा ने पारित कर दिया है। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री श्री करूणानिधि ने कहा कि अभी ऐसे कई शहर है जिनके नाम बदलने की जरूरत है।

बम्बई का नाम मुम्बई किए जाने के बाद मद्रास दूसरा महानगर है जिसका नाम बदला गया है।

किताबों की सबसे बड़ी दुकान

भारतीय नेशनल बुक ट्रस्ट के प्रबंधक के अनुसार दिल्ली में दुनिया की सबसे बडी किताबों की दुकान जल्दी ही खुलने जा रही है। इस दुकान में विभिन्न प्रकार की पचास हजार किताबें बिक्री के लिए उपलब्ध होंगी।

आठ हजार वर्ग फीट क्षेत्र में फैली ये दुकान पहली ऐसी दुकान होगी जहां सभी भारतीय भाषाओं की किताबें उपलब्ध होंगी। इस अनोखी दुकान में एक बुक क्लब भी होगा,जिसके सदस्य विदेशी भी बन सकेंगे।

न्यूजीलैंड की पहली हिन्दी साहित्यिक पत्रिका

'भारत-दर्शन' न्यूजीलैंड में प्रकाशित होने वाली पहली साहित्यिक-पत्रिका है। पत्रिका भारतीय साहित्य,दर्शन व संस्कृति का प्रचार करने का भरसक प्रयास करेगी। संसार भर में बसे हिंदी-प्रेमियो, लेखको व साहित्यकारों को एक मंच प्रदान करना पत्रिका का ध्येय है।

FREE ISSUE

Inside: English Pages
News
Literature

रोहित कुमार 'हैप्पी' द्वारा संपादित व प्रकाशित द्वैमासिक पत्रिका 'भारत-दर्शन'



भारत-दर्शन

अच्छी पत्रिका सच्ची पत्रिका

द्वितीय संस्करण

अंक-१ वर्ष-१ अक्टूबर-नवम्बर १९९६ Oct-Nov 1996 ISSN 1173-9843

संपादकीय

न्यूजीलैंड की भारतीय पत्रकारिता

यूं तो न्यूजीलैंड में अनेक पत्र-पत्रिकाएं समय-समय पर प्रकाशित होती रही है, सबसे पहला प्रकाशित पत्र था,'आर्योदय' जिसके संपादक थे श्री जे. के. नातली,उप संपादक थे श्री पी. वी. पटेल व प्रकाशक थे श्री रणछोड के. पटेल। भारतीयो का ये पहला पत्र १९२१ मे प्रकाशित हुआ था परंतु ये जल्दी ही बंद हो गया।

एक बार फिर १९३५ मे 'उदय' नामक पत्रिका श्री प्रभु पटेल के संपादन मे शुरू हुई जिसका सह-संपादन किया था कुशल मधु ने। परंतु पहली पत्रिका की तरह इस पत्रिका को भी भारतीय समाज का अधिक सहयोग न मिला और पत्रिका को बंद कर देना पडा।

फिर लंबे समय तक किसी पत्र-पत्रिका का प्रकाशन नही हुआ। ९० के दशक में पुन: संदेश नामक पत्र प्रकाशित हुआ व कुछ अंको के प्रकाशन के बाद बंद हो गया। उसके बाद क्रमश: द इंडियन टाईम्स, इंडियन पोस्ट,पेस्फिक स्टार व द ईस्टएंडर प्रकाशित हुए, इसके बाद अंतिम पत्र आया द फीजी-इंडिया एक्सप्रैस जिसका संपादन कर रहे है श्री खान।

९० के दशक मे आई इन पत्रिकाओ मे से अधिकतर बंद हो गई व कुछ अभी भी प्रकाशित हो रही है। १९२१ से लेकर अब तक का न्यूज़ीलैंड की भारतीय पत्रकारिता का इतिहास पढने व समझने के बाद पुन: एक लेखक व पत्रकार का प्रयास 'भारत-दर्शन' आपके समक्ष है। हिंदी भाषा के प्रेम व भारतीय समाज की जरूरत को समझते हुए मेरी नन्ही सी कलम का ये प्रयास 'भारत-दर्शन' आप सब पाठको को समर्पित!

इस अंक मे

लघु-कथाएं

गजले

नारी संसार

व

समाचार

मद्रास शहर का नया नाम

मद्रास का नाम चेन्नई रखने का विधेयक तमिलनाडु विधानसभा ने पारित कर दिया है। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री श्री करूणानिधि ने कहा कि अभी ऐसे कई शहर है जिनके नाम बदलने की जरूरत है।

बम्बई का नाम मुम्बई किए जाने के बाद मद्रास दूसरा महानगर है जिसका नाम बदला गया है।

किताबों की सबसे बड़ी दुकान

भारतीय नेशनल बुक ट्रस्ट के प्रबंधक के अनुसार दिल्ली में दुनिया की सबसे बडी किताबों की दुकान जल्दी ही खुलने जा रही है। इस दुकान में विभिन्न प्रकार की पचास हजार किताबें बिक्री के लिए उपलब्ध होंगी।

आठ हजार वर्ग फीट क्षेत्र में फैली ये दुकान पहली ऐसी दुकान होगी जहां सभी भारतीय भाषाओं की किताबें उपलब्ध होंगी। इस अनोखी दुकान में एक बुक क्लब भी होगा,जिसके सदस्य विदेशी भी बन सकेंगे।

न्यूज़ीलैंड की पहली हिन्दी साहित्यिक पत्रिका

'भारत-दर्शन' न्यूज़ीलैंड में प्रकाशित होने वाली पहली साहित्यिक-पत्रिका है। पत्रिका भारतीय साहित्य,दर्शन व संस्कृति का प्रचार करने का भरसक प्रयास करेगी। संसार भर में बसे हिंदी-प्रेमियो, लेखको व साहित्यकारों को एक मंच प्रदान करना पत्रिका का ध्येय है।

FREE ISSUE

Inside: English Pages
News
Literature

रोहित कुमार 'हैप्पी' द्वारा संपादित व प्रकाशित द्वैमासिक पत्रिका 'भारत-दर्शन'

भारत-दर्शन के पहले अंक का प्रथम और द्वितीय संस्करण

भारत-दर्शन की पत्रकारिता और लेखन केवल पठनीय सामग्री परोसने और मनोरंजन तक सीमित नहीं है। भारत-दर्शन ने नैतिक मूल्यों को भी बढ़ावा देने पर बल दिया है। प्रकाशनार्थ सामग्री का चयन करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा कि सामग्री नैतिक मूल्यों पर खरी उतरती हो। हमारा प्रयास है कि सत्साहित्य का वितरण हो जिससे विचारों का प्रदूषण दूर हो और एक सुदृढ़ एवं स्वस्थ समाज का निर्माण हो। हमें यह बताते हुए आनंद की अनुभूति हो रही है कि हमारे लेखन से प्रेरित कुछ नवयुवकों ने निर्धन बच्चों के उद्धार हेतु भारत में एक संस्था (प्रयत्न फाउंडेशन ऑफ इंडिया, नागपुर) शुरू की। उनकी वैब साइट के अध्यक्षीय उद्बोधन में लिखा है कि किस प्रकार इन पंक्तियों के लेखक की एक कविता ने उन्हें यह

संस्था खोलने को प्रेरित किया। संस्था के अध्यक्षीय उद्बोधन का वह अंश इस प्रकार है--

“मित्रों, मैंने रोहित कुमार हैप्पी की एक कविता पढ़ी। कविता कुछ यूं थी कि--

‘कूड़ेदान में कचरा बिनते बच्चों को देखकर, किसी ने कविता लिखी, किसी ने कहानी रची, किसी ने चित्र बनाया। कवि को उसकी रचना पर वाहवाही मिली, कहानीकार को नाम व धन मिला, चित्रकार को प्रशंसा व अर्थ मिला। --पर सवाल यह रहा कि उस कूड़ेदान में कचरा बीनने वाले बच्चों को क्या मिला..? जिन्हें देखकर कविता, कहानी और चित्र बनाया गया..’

‘यकीन मानिए जब से इस कविता को मैंने पढ़ा, मेरा हृदय उस पल से मचल उठा। अपनी स्वयं की रचना जिससे मैंने भी 35600 रुपये कमाई की थी, आज मेरे सामने सवाल खड़ा हुआ कि क्या इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन छोटे-छोटे बच्चों को कचरा बिनते हुए देखकर मैंने या अन्य ने ऐसी रचना की थी? यकीन मानिए उस दिन से आज तक मैंने स्वयं से कई प्रश्न किए। कुछ प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास किया पर मुझे कहीं किसी रूप में उसका उत्तर नहीं मिला। प्रश्न यह है कि ‘कचरा बिनने वाले बच्चों तक इस देश की व्यवस्था आजादी के 70 वर्ष बाद भी क्यों नहीं पहुंची...? यह प्रश्न मैं आपके लिए छोड़ता हूं, यदि आपके पास इस प्रश्न का उत्तर हो, यदि आपकी तीक्ष्ण बुद्धि में वह क्षमता हो जो मुझे इसका उत्तर दे सकें तो यकीन मानिए मैं सदैव आपका ऋणी रहूंगा.. यदि आप मुझे इसका सटीक उत्तर दे पाते हैं तो विचारों की उधेड़बुन में जिसमें मैं खोया रहा मुझे बाहर निकलने का रास्ता मिल जाएगा।“

प्रयत्न फाउंडेशन ऑफ इंडिया, नागपुर

मुख्य पृष्ठ हमारे बारे में

मित्रों, मैंने रोहित कुमार हैप्पी की एक कविता पढ़ी.कविता कुछ यूं थी कि

"कूड़ेदान में कचरा बिनते बच्चों को देखकर, किसी ने कविता लिखी, किसीने कहानी रची, किसी ने चित्र बनाया। कवि को उसकी रचना पर वाहवाही मिली , कहानीकार को नाम व धन मिला, चित्रकार को प्रशंसा व अर्थ मिला।। पर सवाल यह रहा उस कूड़ेदान में कचरा बीनने वाले बच्चों को क्या मिला..?? जिन्हें देखकर कविता , कहानी और चित्र बनाया गया.."

यकीन मानिए जब से इस कविता को मैंने पढ़ा मेरा हृदय उस पल से मचल उठा. अपनी स्वयं की रचना जिससे मैंने भी 35600 रुपये कमाई कमाई की. आज मेरे सामने सवाल खड़ा हुआ कि क्या इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन छोटे-छोटे बच्चों को कचरा बिनते हुए देखकर मैंने या अन्य ने ऐसी रचना की थी. यकीन मानिए उस दिन से आज तक मैंने स्वयं से कई प्रश्न किए. कुछ प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास किया पर मुझे कहीं किसी रूप में उसका उत्तर नहीं मिला। प्रश्न यह है कि 'कचरा बिनने वाले बच्चों तक इस देश की व्यवस्था आजादी के 70 वर्ष बाद भी क्यों नहीं पहुंची...?? यह प्रश्न मैं आपके लिए छोड़ता हूं यदि आपके पास इस प्रश्न का उत्तर हो, यदि आपकी तीक्ष्ण बुद्धि में वह क्षमता हो जो मुझे इसका उत्तर दे सके तो यकीन मानिए मैं सदैव आपका ऋणी रहूंगा.. यदि आप मुझे इसका सटीक उत्तर दे पाते हैं तो विचारों की उधेड़बुन में जिसमें मैं खोया रहा मुझे बाहर निकलने का रास्ता मिल जाएगा।

क़लम की ताकत के बारे में अकबर इलाहाबादी कहते हैं--

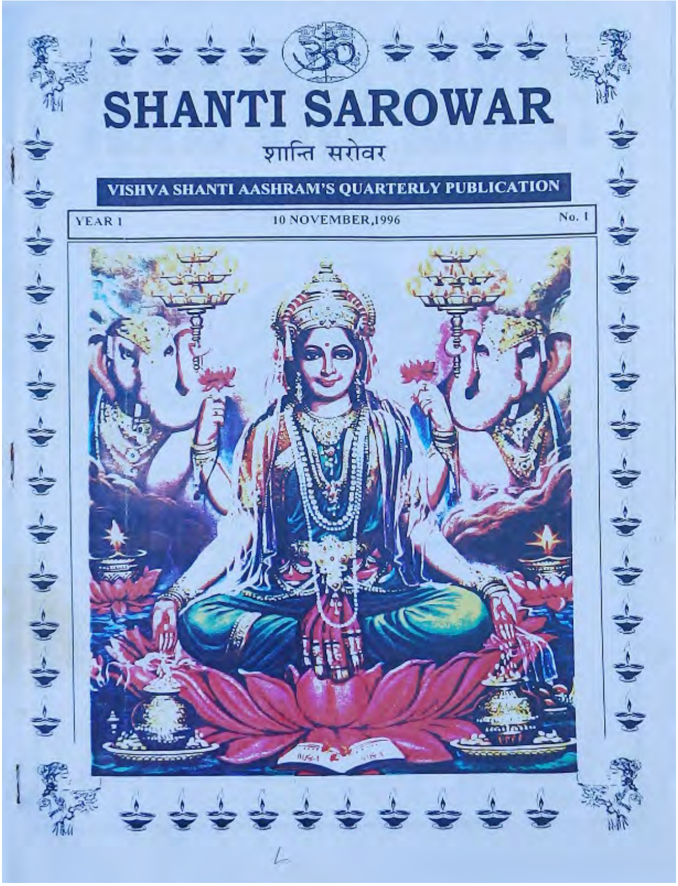
"खींचो न कमानों को न तलवार निकालो

जब तोप मुक़ाबिल हो तो अख़बार निकालो।"

आपके लेखन के परिणाम असीमित हैं। आपका लेखन किसी का जीवन परिवर्तित कर सकता है, उसका मार्गदर्शन कर सकता है और सामाजिक बदलाव ला सकता है।

शान्ति सरोवर

इसी वर्ष 1996 में विश्व शांति आश्रम ने स्व॰ एम सी विनोद शर्मा के संपादकत्व में 'शान्ति सरोवर' नामक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन किया। इस पत्रिका का पहला अंक 10 नवंबर 1996 को निकला। यह पत्रिका ए4 आकार की, रंगीन मुखपृष्ठ की पत्रिका थी जिसकी सामग्री अंग्रेज़ी में थी लेकिन कुछ पन्ने हिंदी में थे। कुल 38 पृष्ठ के इस अंक में अंतिम 9 पृष्ठ हिंदी के थे। पहला अंक दीवाली अंक था।



'शान्ति सरोवर' त्रैमासिक पत्रिका

महिके वतन न्यूज़ीलैंड

2003 में एक पंजाबी-हिंदी पत्रिका, 'महिके वतन न्यूज़ीलैंड' नाम से प्रकाशित हुई इसमें भी हिंदी के पृष्ठ थे। इसका मूल शीर्षक पंजाबी (गुरुमुखी) में मुद्रित था लेकिन उसके नीचे हिंदी में भी मुद्रित था। इसके केवल कुछ ही अंक प्रकाशित हुए। इसका प्रकाशन न्यूज़ीलैंड इंडियन स्पोर्ट्स एंड कल्चरल एसोसिएशन और संचालन हरदेव बराड़ कर रहे थे।

धनक

न्यूज़ीलैंड की ‘उर्दू हिंदी कल्चरल एसोसिएशन ऑफ़ न्यूज़ीलैंड’ भी 2012 से एक वार्षिक पत्रिका ‘धनक’ प्रकाशित करती है। इस पत्रिका का संपादन पहले प्रीता व्यास करती रही है और पिछले अंक का प्रकाशन ‘सुमन कपूर’ ने किया है।

गुलदस्ता

यह पत्रिका मई 2015 से आरंभ हुई थी। कुछ समय तक ‘गुलदस्ता’ मासिक पत्रिका प्रकाशित हुई लेकिन वर्तमान में इसका मुद्रित संस्करण उपलब्ध नहीं है लेकिन इसका वैब संस्करण उपलब्ध है। इसका संपादन नीलम मधु करती हैं।इंटरनेट पर विश्व का पहला हिंदी प्रकाशन

इंटरनेट पर विश्व का पहला हिंदी प्रकाशन

हिंदी वैब पत्रकारिता का आरंभ न्यूजीलैंड से प्रकाशित **भारत-दर्शन** (साहित्यिक पत्रकारिता) के रूप में दिसंबर-जनवरी 1996-1997 से हुआ।

भारत-दर्शन का मुद्रित संस्करण 1996 से चल ही रहा था। यह पत्रिका न्यूजीलैंड से प्रकाशित होती थी। दिसंबर-जनवरी 1996-1997 में इसके वैब संस्करण ने इसे विश्व का पहला हिंदी प्रकाशन बना दिया। अब 'भारत-दर्शन' को ‘इंटरनेट पर विश्व की पहली हिंदी साहित्यिक पत्रिका’ होने का गौरव प्राप्त हो चुका था। विश्वभर में फैले भारतीयों ने 'भारत-दर्शन' की हिंदी सेवा की सराहना की।

नवंबर- दिसंबर 1998 में भारत-दर्शन अपने डोमेन (bharatdarshan.co.nz) पर उपलब्ध हो गया। इससे पहले यह ज़ूम डॉट कॉम और एशिया फोकस पर सब-डोमेन के रूप में उपलब्ध थी। वैब हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता का उदय निर्विवाद 'भारत-दर्शन' के रूप में स्वीकार किया गया। वर्तमान में भारत-दर्शन हिंदी न्यू मीडिया में

अग्रणी है और इस समय इंटरनेट पर सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली ऑनलाइन हिंदी पत्रिका है।

भारत-दर्शन के वैब संस्करण के कुछ समय के बाद 1997 में ही भारत से 'दैनिक जागरण' ने अपना वैब संस्करण आरंभ करके वैब पर अपनी उपस्थिति दर्ज की।

हिंदी वैब साहित्यिक पत्रकारिता पर चर्चा करने से पहले कुछ तथ्य स्पष्ट करना शोधार्थियों के लिए हितकर होगा। वैब पर हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता की शुरुआत व इसे स्थापित करने में प्रवासी भारतीयों की विशेष भूमिका रही है। इंटरनेट पर जो पहले तीन साहित्यिक प्रकाशन उपलब्ध हुए, वे थे:

- इंटरनेट पर हिंदी का पहला प्रकाशन 'भारत-दर्शन' (दिसंबर-जनवरी, 1996-97) था। इसका मुद्रित प्रकाशन पहले ही प्रकाशित हो रहा था। अब यह पत्रिका इंटरनेट पर विश्व का पहला प्रकाशन व वैब पर पहली हिंदी साहित्यिक पत्रिका बन गई।
- 'भारत-दर्शन' के बाद 1999 में अमरीका से 'बोलोजी' प्रकाशित होने लगी जिसमें कुछ पृष्ठ हिंदी के होते थे। राजेन्द्र कृष्ण इसका प्रकाशन करते थे। उस समय इसके हिंदी पृष्ठों का संपादन पूर्णिमा वर्मन करती थीं। यह इंटरनेट पर हिंदी साहित्य का दूसरा प्रकाशन था।
- तीसरा प्रकाशन था पूर्णिमा जी की 'अभिव्यक्ति' पत्रिका जो 2000 में शारजहा से प्रकाशित होने लगा।

दिलचस्प बात यह है कि वैब पर ये उपरोक्त तीनों प्रकाशन भारत से प्रकाशित न होकर न्यूजीलैंड, अमरीका व शारजहा से प्रकाशित हुए थे। ये तीनों प्रकाशन प्रवासी भारतीयों द्वारा प्रकाशित व संपादित हो रहे थे। यह तथ्य कि हिंदी वैब साहित्यिक-पत्रकारिता विदेश से आरंभ हुई और इसको आगे बढ़ाने वाली अन्य मुख्य पत्र-

पत्रिकाएं भी विदेश की धरती से ही वैब पर आईं, कई शोधार्थियों को हतप्रभ कर सकता है।

हिंदी वैब साहित्यिक-पत्रकारिता के विदेश में अंकुरित होने के कारण

इसका एक विशेष कारण है, भारत से विदेश में आ बसे उन सभी लोगों की जिनकी रुचि पठन-पाठन में थी, को साहित्यिक तुष्टि की आवश्यकता थी। यह सरलता से समझा जा सकता है चूंकि जिस देश में वे आ बसे थे वहाँ अपनी भाषा में पढ़ने व साहित्यिक अभिरुचि के अनुरूप सामग्री उपलब्ध नहीं थी। यह मुख्य कारण था। दूसरा कारण यह था कि विकसित देशों में जनसामान्य को इंटरनेट सरल सुलभ था। वैब होस्टिंग, डोमेन इत्यादि पाना अपेक्षाकृत आसान था।

वैश्विक स्तर पर भारतीय वैब और हिंदी वैब पत्रकारिता

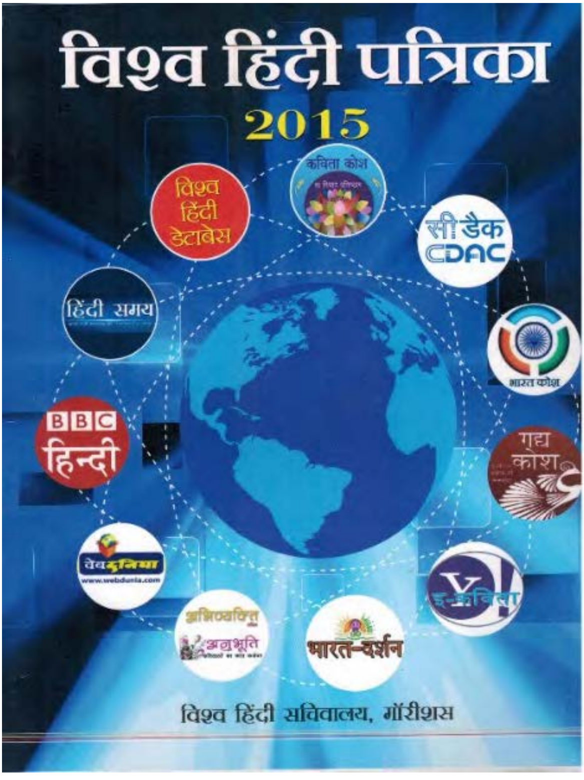
वैश्विक स्तर पर यदि हम भारतीय वैब पत्रकारिता और हिंदी वैब पत्रकारिता पर दृष्टिपात करें तो भारतीय पत्रकारिता में वैब पत्रकारिता का आरंभ 1995 में अँग्रेज़ी समाचारपत्र 'द हिंदू' से हुआ।

भारत में हिंदी वैब पत्रकारिता का उदय 1997 के अंत में दैनिक जागरण से हुआ और उसके बाद 1998 में अमर उजाला व दैनिक भास्कर ने भी वैब पर अपनी उपस्थिति दर्ज की। 1999 में वैबदुनिया और नई दुनिया ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया लेकिन विश्व पटल पर हिंदी वैब पत्रकारिता 1996-1997 में न्यूज़ीलैंड के माध्यम से आरंभ हो चुकी थी। दैनिक जागरण ने अपने आरंभिक दौर में साहित्य के अंतर्गत कुछ समय तक भारत-दर्शन की कड़ी (लिंक) जोड़े रखी थी।

कुछ वर्षों के बाद बीबीसी हिंदी जैसे मीडिया दिग्गजों ने भी वैब मीडिया की महत्ता को समझते हुए 2001 में अपना वैब संस्करण आरम्भ किया।

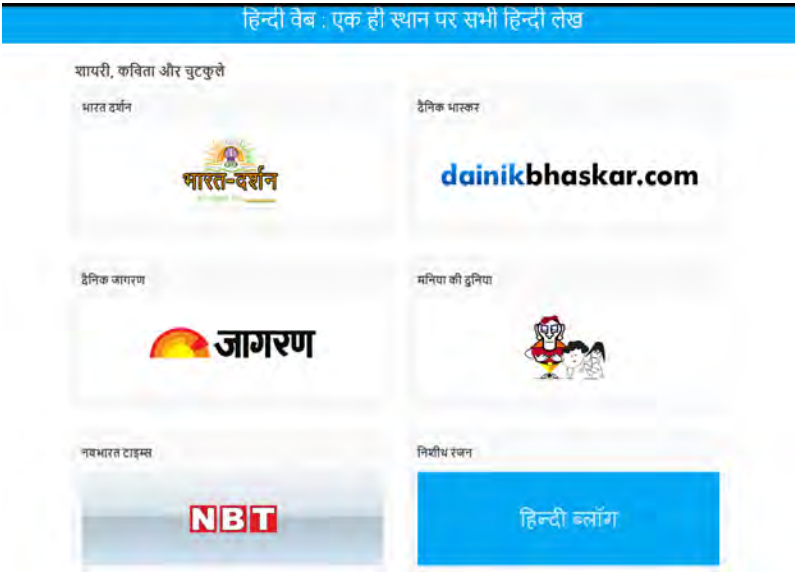
वैब के मानचित्र पर हिंदी का नाम 'भारत-दर्शन' ने अंकित किया। भारत-दर्शन के पास हिंदी प्रकाशन, खोजी पत्रकारिता, साहित्यिक पत्रकारिता, सर्च इंजिन का अनुभव, ग्राफिक, मल्टिमीडिया और डेस्कटॉप पब्लिशिंग का अनुभव था जिसने इसे अपनी गुणवत्ता स्थापित करने और स्तरीय पत्रकारिता में अपना स्थान बनाने में सहायता की।

विश्व हिंदी सचिवालय ने अपनी 'विश्व हिंदी पत्रिका' के 2015 के अंक में विश्व के प्रमुख हिंदी प्रकाशनों में 'भारत-दर्शन' को भी स्थान दिया।



विश्व हिंदी पत्रिका - विश्व हिंदी सचिवालय की वार्षिक पत्रिका

गूगल द्वारा संचालित हिंदी वैब में भारत-दर्शन को गूगल ने मुख्यधारा के प्रकाशनों के समकक्ष सम्मान दिया था।



गूगल द्वारा संचालित साइट हिंदी वैब में भारत-दर्शन

उस समय में जब इंटरनेट आम नहीं था तो 'भारत-दर्शन' का प्रकाशन कैसे संभव हुआ?

‘1996 के शुरुआती दिनों में न्यूज़ीलैंड की एक लायब्रेरी में पहले-पहल इंटरनेट को जानने व इसका उपयोग करने का अवसर मिला। जब किसी हिंदी पत्र-पत्रिका को खोजना चाहा तो कोई परिणाम नहीं आया। भारतीय (इंडियन) पत्र-पत्रिका खोजने पर 'द हिंदू' के दर्शन हुए जो अँग्रेज़ी में था। लायब्रेरियन से इस बारे में पूछा तो उसने कुछ देर खोजने में सहायता करने के बाद इस बात की पुष्टि की कि 'हिंदी' का कोई प्रकाशन इंटरनेट पर नहीं है। बस तभी दिमाग में यह आया कि यदि नहीं है तो होना चाहिए और ‘भारत-दर्शन’ को इंटरनेट पर प्रकाशित करने के काम में

जुट गए। परिणामस्वरूप कुछ समय बाद 'भारत-दर्शन इंटरनेट पर प्रकाशित होने लगा।'

इंटरनेट बहुत तेज गति से आगे बढ़ रहा है। बहुत से संसाधन जो आरंभिक काल में अत्यधिक लोकप्रिय और उपयोगी थे, आज उनमें से अनेक अनुपस्थित हैं। इसी प्रकार किसी समय में अत्यंत लोकप्रिय रही हिंदी की अनेक वैब साइट बंद हो चुकी हैं और बहुत-सी वैब प्रौद्योगिकी में आए तेज परिवर्तनों का दंश झेल रही हैं। आज यह आवश्यक है कि वैब प्रकाशक को वैब पत्रकारिता, उपयोग किए जाने वाले संसाधनों और आधुनिक प्रौद्योगिकी की जानकारी हो।

न्यूज़ीलैंड के हिंदी समाचार पत्र

कूक

मार्च 2005 से जून 2008 के बीच 'कूक हिंदी समाचार' ऑकलैंड में प्रकाशित होता रहा। समाचार पत्र के रूप में यह न्यूज़ीलैंड का पहला हिंदी समाचार पत्र था। यह पंजाबी समाचार पत्र 'कूक' का हिंदी संस्करण था। पंजाबी पत्र अब भी प्रकाशित हो रहा है लेकिन हिंदी संस्करण 2008 में बंद हो गया। इसका प्रकाशन 'किन क्रिएशन इंटरनेशनल' (Kin Creations International) द्वारा किया जा रहा था।


कूक डायरी
हॉट व कोल्ड ड्रिंक से बचें
New Zealand
13 July 2005 कूक
संपादकीय
राजनीतिक दलों का आंतरिक संकट

कूक हिंदी समाचार (मार्च 2005 - जून 2008)

अपना भारत


अपना भारत

NEW ZEALAND'S FIRST HINDI NEWSPAPER FOR INDIAN COMMUNITY

'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी'

विश्व में भारत की एकता का प्रतिक

Bank of Baroda (New Zealand) Ltd.

Smartest

No Charges on any number of transactions

Better exchange rate Same day credit

"Healthier Homes Happier Homes"

Get rid of Moisture and Condensation with Reliance Ventilaton System

Call us on 0800 787 111 for your FREE QUOTE!

We are Authorised dealer of Mitsubishi Electric Heat Pumps

नवम्बर, 2019 में 'अपना भारत' नाम से एक हिंदी समाचार पत्र आरम्भ हुआ। कुछ अंकों के पश्चात इस पत्र के मुद्रित संस्करण को ई-पत्र के रूप में परिवर्तित कर दिया गया। इस समय यह वैब पर उपलब्ध है। सोहनलाल मित्तल और देव भारद्वाज इसके प्रकाशक हैं।

इंडियंज़ एक्सप्रेस

वैलिंग्टन से प्रकाशित होने वाले इस पत्र में कुछ हिंदी सामग्री रहती है। इनकी वैबसाइट पर हिंदी समाचार प्रकाशित हो रहे हैं।



इंडियंज़ एक्सप्रेस

हिंदी प्रसारण सेवाएँ

रेडियो

ऑकलैंड का **प्लैनेट एफ.एम** एक गैर-लाभकारी समुदायिक रेडियो स्टेशन है जिसकी शुरुआत 1989 में 'एक्सेस कम्युनिटी रेडियो' के रूप में हुई थी। सन् 2000 तक यह 810 ए.एम पर प्रसारित होता था और इसके बाद से यह प्लैनेट एफ.एम के रूप में 104.6 एफ़.एम पर प्रसारित होने लगा। इस रेडियो पर शुरुआती दौर से ही हिंदी के कार्यक्रम प्रसारित होने लगे।

'रेडियो तराना' का प्रसारण 15 जून 1996 से आरंभ हुआ था। रेडियो तराना के आरंभिक दौर में राजेश महाराज, रूपा सचदेव, नित्यानन्द सुंदर, परमजीत परमार व हेमंत पारिख के कार्यक्रम चर्चित रहे हैं। इस समय इस रेडियो में लगभग 20 सदस्य हैं। रेडियो के प्रमुख कार्यक्रमों में नेहा और संजेश का 'मॉर्निंग नंबर 1', पवन का 'मिड डे शो', जिलेश का 'तेज़ गाड़ी' इत्यादि सम्मिलित हैं।

रेडियो तराना के प्रसारण से पहले अन्य रेडियो जैसे 'एक्सेस कम्युनिटी रेडियो' और 'देस-परदेस' इत्यादि चल रहे थे लेकिन बहुत शीघ्र ही 'तराना' हिंदी श्रोताओं का चहेता बन गया।

बाद के वर्षों में 'अपना 990 एएम' रेडियो 2003 से प्रसारित होने लगा।

इस समय 'रेडियो तराना', 'एक्सेस कम्युनिटी रेडियो', 'अपना एफएम', 'रेडियो स्पाइस', 'हम्म रेडियो' इत्यादि अनेक रेडियो अपना प्रसारण कर रहे हैं।

नित्यानन्द सुंदर फीजी और न्यूज़ीलैंड के लोकप्रिय रेडियो उद्घोषक रहे हैं। वे समाचार वाचक और धार्मिक कार्यक्रम प्रस्तुति के अतिरिक्त बहुत अच्छे मंच संचालक भी हैं।

रूपा सचदेव और परमजीत परमार अपने 'टॉकबॅक शो' व अन्य कार्यक्रमों के लिए जानी जाती रही हैं। रूपा सचदेव का श्रोता वर्ग बहुत विस्तृत रहा है। उन्होंने लगभग सभी हिंदी रेडियो के अतिरिक्त सामुदायिक हिंदी टीवी पर भी काम किया है।

परमजीत परमार राजनीति में आ गईं और वर्तमान में मनोनीत सांसद हैं।

हेमंत पारिख अपनी बॉलीवुड सामग्री, मंचीय कार्यक्रमों और हिंदी में बॉलीवुड समाचार प्रस्तुति के लिए जाने जाते हैं।

रोहित कुमार हैप्पी न्यूज़ीलैंड के स्थानीय रेडियो (एक्सेस कम्युनिटी रेडियो, रेडियो देस-परदेस और तराना) के अतिरिक्त जर्मन के डायचे वेले व वॉइस ऑफ अमेरिका की हिंदी सेवा से वर्षों तक जुड़े रहे।

उपरोक्त के अतिरिक्त प्रतिमा नन्द, जयदेव, नीति शाह, अनिल खोसला, माया स्टुअर्ट, प्रीता व्यास और वैलिंग्टन के रत्न प्रकाश इत्यादि रेडियो की प्रसारण सेवा से जुड़े रहे हैं।

टीवी

अगस्त 1998 से ऑकलैंड का 'फेस टीवी' जो पहले 'ट्राएंगल टेलीविजन' कहलाता था, न्यूजीलैंड में सार्वजनिक प्रसारण सेवा उपलब्ध करवाता है। इसपर अनेक स्थानीय कार्यक्रम हिंदी में प्रसारित होते थे। दिसंबर 2013 से यह 'स्काई नेटवर्क' पर प्रसारित होने लगा।

ऑकलैंड से संचालित 'ट्राएंगल टेलीविजन' ने 25 अगस्त 2006 से 31 मार्च 2009 तक अपनी प्रसारण सेवाएँ वैलिंग्टन में भी उपलब्ध करवाई थीं। इस चैनल पर समाचार, सांस्कृतिक और योग से संबंधित कई हिंदी प्रसारण होते थे।

इस समय 'अपना टीवी' हिंदी धारावाहिक, समाचार, ड्रामा, खाना ख़जाना व हिंदी फिल्में प्रसारित करता है।

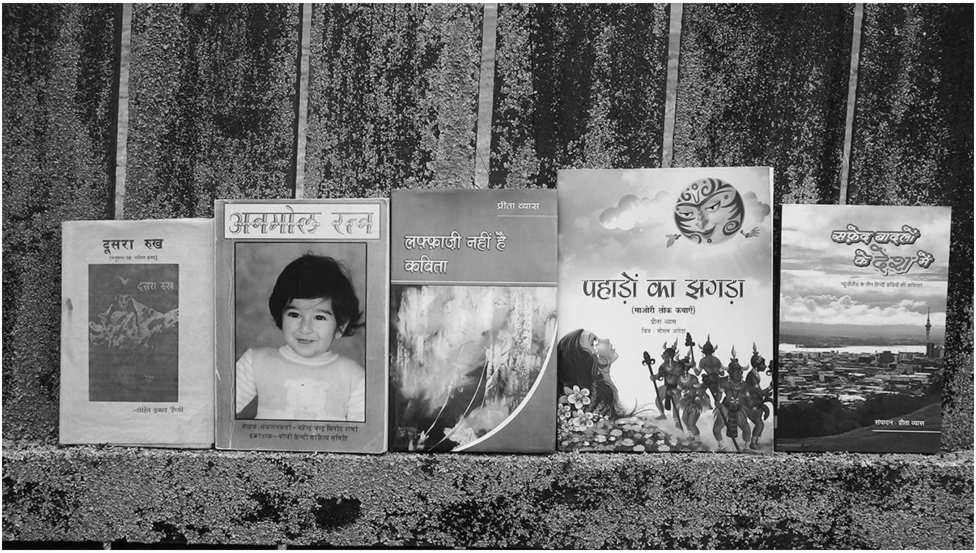
न्यूजीलैंड के अधिकतर भारतीय टीवी बॉक्स व यू ट्यूब के माध्यम से हिंदी कार्यक्रमों का आनंद लेते हैं।

हस्तलिपि से आरंभ हुआ न्यूज़ीलैंड में हिंदी लेखन

यद्यपि न्यूज़ीलैंड से पहला हिंदी आलेख 1930 में 'विशाल भारत' के माध्यम से भारत में प्रकाशित हुआ था। उस समय न्यूज़ीलैंड में न तो हिंदी प्रकाशन की सुविधा थी और न ही पाठक वर्ग था। इस आलेख का विस्तृत उल्लेख हमने 'न्यूज़ीलैंड के हिंदी के लेखक और उनका लेखन' के अंतर्गत किया है। इसके

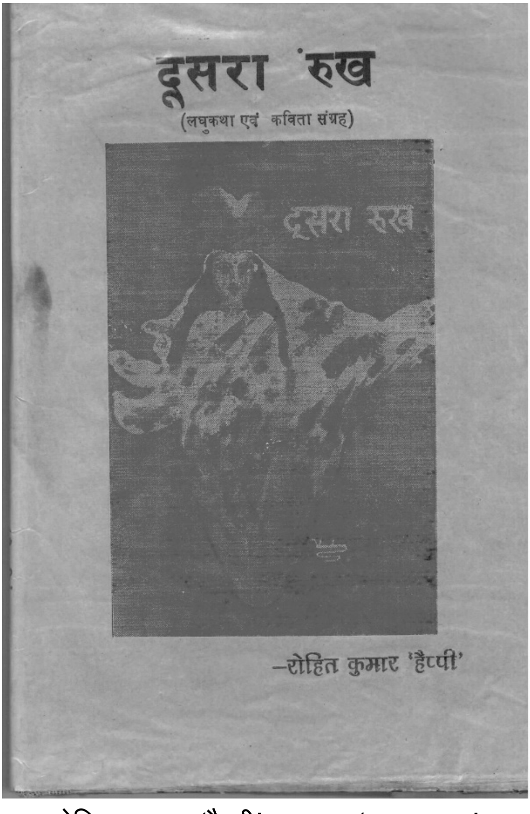
पश्चात न्यूज़ीलैंड में हिंदी लेखन 90 के दशक में आंशिक रूप से आरंभ होता है। 'द इंडियन टाइम्स' में 1992 में हस्तलिखित हिंदी रिर्पोटों के प्रकाशन से आरम्भ होता है। यह समाचार पत्र मूलतः अँग्रेजी में था लेकिन कुछ समय तक इसमें आंशिक रूप में हिंदी का प्रकाशन हुआ। इस पत्र में 'रोहित कुमार हैप्पी' की हस्तलिखित रिपोर्ट्स देखी जा सकती हैं। इस समाचार पत्र में स्व॰ महेंद्र सी विनोद (जो फीजी के समाचार पत्र शान्ति दूत के संपादक भी रह चुके थे) भी कभी-कभी काका हाथरसी इत्यादि कवियों की कविताएं अपनी हस्तलिपि में भेजते थे।

न्यूज़ीलैंड में लिखी गई हिंदी पुस्तकें



न्यूज़ीलैंड में वर्तमान में अनेक लोगों ने हिंदी पुस्तकें लिखी हैं। न्यूज़ीलैंड के किसी भारतीय द्वारा लिखी गई पहली पुस्तक थी, ‘दूसरा रुख़’, जिसका प्रकाशन 1989 में भारत से करवाया गया था। यह रोहित कुमार ‘हैप्पी’ की लघुकथाओं व काव्य

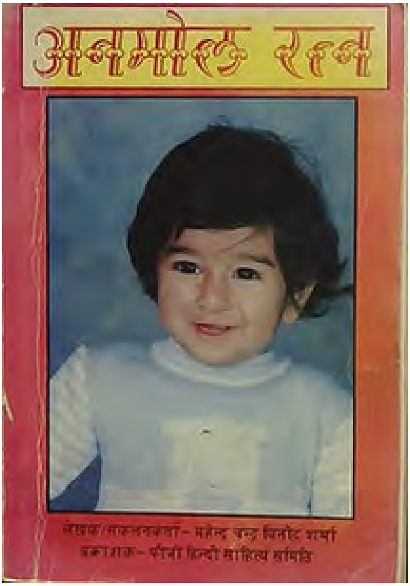
का संग्रह था। इसमें प्रकाशित अनेक लघु-कथाएँ दैनिक ट्रिब्यून, पंजाब केसरी इत्यादि भारतीय समाचारपत्रों में प्रकाशित हुई थीं। रोहित कुमार 'हैप्पी' न्यूज़ीलैंड आने से पहले ही अपने छात्र जीवन से हिंदी लेखन के साथ जुड़े हुए थे। इनकी रचनाएँ उस समय भी दैनिक पंजाब केसरी, वीर प्रताप, दैनिक ट्रिब्यून इत्यादि में निरंतर प्रकाशित हो रही थीं। 'दूसरा रूख' लघुकथा को 'साहित्यालंकार' मिला था।



रोहित कुमार 'हैप्पी' पुस्तक 'दूसरा रूख'

इसके बाद ऑकलैंड निवासी स्व. महेंद्र चन्द्र विनोद शर्मा (मास्टर विनोद) की पुस्तक, 'अनमोल रत्न' 1994 में प्रकाशित हुई। यह फीजी हिंदी साहित्य समिति, सूवा द्वारा प्रकाशित हुई थी। मास्टर विनोद मूलत फीजी से थे और फीजी से

प्रकाशित 'शान्तिदूत' के पूर्व संपादक थे। यह कहा जा सकता है कि 'अनमोल रत्न' किसी फीजी भारतीय द्वारा न्यूज़ीलैंड में लिखी गई पहली पुस्तक थी।

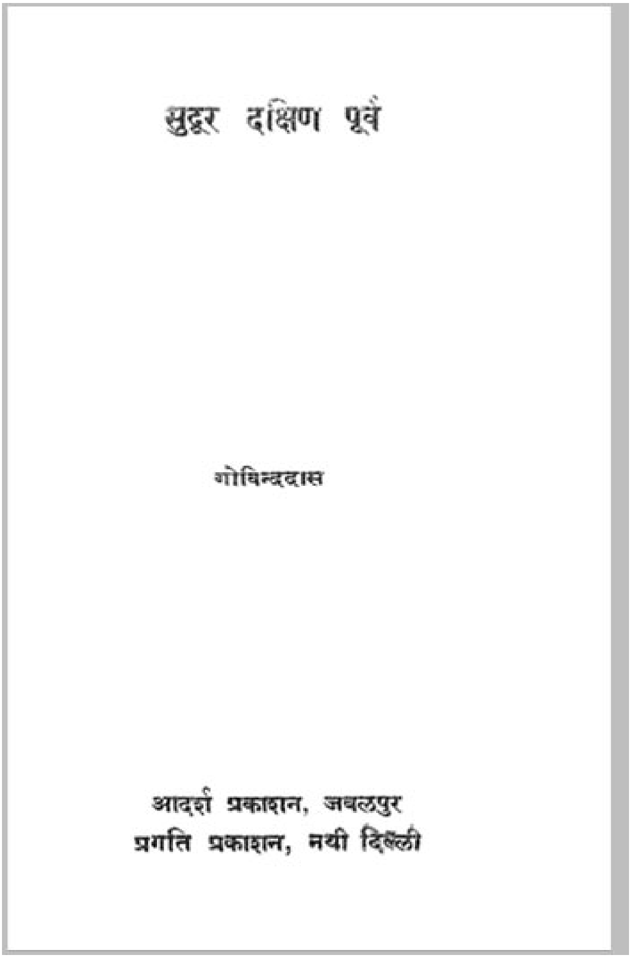


महेंद्र चन्द्र विनोद शर्मा की पुस्तक

उन्होंने कुछ समय तक न्यूज़ीलैंड में 'शांति सरोवर' पत्रिका का संपादन भी किया जिसमें उन्होंने हिंदी पन्ने भी जोड़ने का प्रयास किया था। मास्टर विनोद की हिंदी हस्तलिपि बहुत सुंदर थी।

उपरोक्त दो पुस्तकें न्यूज़ीलैंड के भारतीयों ने लिखी थीं। इन दो पुस्तकों से पहले भी 'न्यूज़ीलैंड' पर हिंदी में एक पुस्तक लिखी गई थी लेकिन यह किसी न्यूज़ीलैंड भारतीय निवासी द्वारा नहीं बल्कि भारत से न्यूज़ीलैंड के आधिकारिक दौरे पर आए हिंदी साहित्यकार और राजनेता सेठ गोविंददास द्वारा लिखी गई थी। वे भारत से न्यूज़ीलैंड के दौरे पर आए पहले ऐसे भारतीय थे जिन्होंने न्यूज़ीलैंड के अपने दौरे को हिंदी में लिपिबद्ध किया। इस प्रकार किसी भारतीय द्वारा न्यूज़ीलैंड पर हिंदी

में पुस्तक लिखने का श्रेय सेठ गोविंद् दास को जाता है। 1950 में सेठ गोविंददास (तत्कालीन सांसद तथा हिंदी के साहित्यकार) जोकि महात्मा गांधी के निकट सहयोगी थे, न्यूज़ीलैंड आए थे। वे यहाँ 'कॉमनवैल्थ पार्लियामेंटरी कॉन्फ्रेंस' में 5 सदस्यी भारतीय प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व कर रहे थे। उन्होंने न्यूज़ीलैंड, फीजी और ऑस्ट्रेलिया की यात्रा की और 1951 में इन तीनों देशों पर 'सुदूर दक्षिण पूर्व' नामक पुस्तक लिखी। यह पुस्तक 1951 में आदर्श प्रकाशन, जबलपुर व प्रगति प्रकाशन, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित की गई थी।


सुदूर दक्षिण पूर्व

गोविन्ददास

आदर्श प्रकाशन, जबलपुर
प्रगति प्रकाशन, नयी दिल्ली

सेठ गोविंददास भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात आधिकारिक तौर पर भारत से न्यूज़ीलैंड आने वाले पहले शिष्टमंडल का नेतृत्व कर रहे थे। वे अपनी पुस्तक में इसकी पुष्टि करते हुए लिखते हैं, *"न्यूज़ीलैंड में आजतक भारत का कोई सार्वजनिक कार्यकर्ता नहीं आया था। पहले पहल हम ही लोग यहाँ आये थे।"*

वर्तमान समय में **प्रीता व्यास** की 'माओरी लोक कथाएँ' (2018) विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसके साथ ही उन्होंने न्यूज़ीलैंड के तीन कवियों का एक काव्य संकलन, 'सफ़ेद बादलों के देश में' (2019) का संपादन किया है। उनके अपने दो काव्य संग्रह हैं, 'लफ़्फ़ाजी नहीं है कविता' 2014 और 'जलधि समाना बूंद में' (2017)। उन्होंने हिंदी में बाल साहित्य, लोकसाहित्य व पत्रकारिता पर पुस्तकें लिखी हैं।

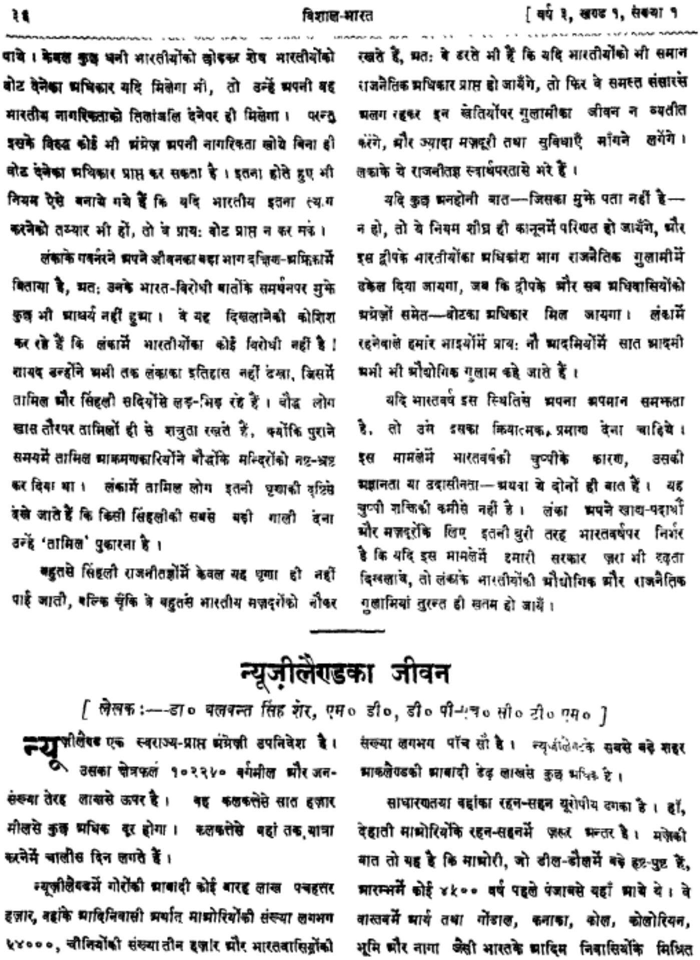
न्यूज़ीलैंड के हिंदी साहित्यकार और उनका लेखन

लेखक

न्यूज़ीलैंड पर लिखा गया सबसे पहला आलेख 1930 के 'विशाल भारत' में प्रकाशित हुआ था। इस आलेख के लेखक डॉ बलवंत सिंह शेर थे। आलेख का शीर्षक था, 'न्यूज़ीलैंड में जीवन'। 'विशाल भारत' का संपादन उस समय के सुप्रसिद्ध पत्रकार बनारसीदास चतुर्वेदी करते थे।

विशाल भारत अपने समय का प्रसिद् हिंदी पत्र था। इसका प्रकाशन 1928 में कोलकाता से आरम्भ हुआ। इसके संस्थापक रामानन्द चट्टोपाध्याय थे। बनारसीदास चतुर्वेदी इसके प्रथम सम्पादक बने और उन्होंने 1928 से 1937 तक इसका सम्पादन किया। बनारसीदास चतुर्वेदी के पश्चात 'विशाल भारत' का सम्पादन सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', मोहनसिंह सेंगर तथा श्रीराम शर्मा जैसे लेखकों/पत्रकारों

ने किया। 'विशाल भारत' प्रवासी भारतीयों के लिए एक सुदृढ़ मंच के रूप में काम करता रहा।


३६ विशाल-भारत [वर्ष ३, खण्ड १, संख्या १

पाये। केवल कुछ धनी भारतीयोंको छोड़कर शेष भारतीयोंको वोट देनेका अधिकार यदि मिलेगा भी, तो उन्हें अपनी यह भारतीय नागरिकताको तिलांजलि देनेपर ही मिलेगा। परन्तु इसके विरुद्ध कोई भी अंग्रेज़ अपनी नागरिकता खोये बिना ही वोट देनेका अधिकार प्राप्त कर सकता है। इतना होते हुए भी नियम ऐसे बनाये गये हैं कि यदि भारतीय इतना त्याग करनेको तय्यार भी हों, तो वे प्रायः वोट प्राप्त न कर सकें।

लंकाके गवर्नरने अपने जीवनका बड़ा भाग दक्षिण-अफ्रिकामें बिताया है, अतः उनके भारत-विरोधी बातोंके समर्थनपर मुझे कुछ भी आश्चर्य नहीं हुआ। वे यह दिखलानेकी कोशिश कर रहे हैं कि लंकामें भारतीयोंका कोई विरोधी नहीं है! शायद उन्होंने अभी तक लंकाका इतिहास नहीं देखा, जिसमें तामिल और सिंहली सदियोंसे लड़-भिड़ रहे हैं। बौद्ध लोग खास तौरपर तामिलों ही से शत्रुता रखते हैं, क्योंकि पुराने समयमें तामिल आक्रमणकारियोंने बौद्धोंके मन्दिरोंको नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था। लंकामें तामिल लोग इतनी घृणाकी दृष्टिसे देखे जाते हैं कि किसी सिंहलीकी सबसे बड़ी गाली देना उन्हें 'तामिल' पुकारना है।

बहुतसे सिंहली राजनीतिज्ञोंमें केवल यह घृणा ही नहीं पाई जाती, बल्कि चूंकि वे बहुतसे भारतीय मज़दूरोंको नौकर रखते हैं, अतः वे डरते भी हैं कि यदि भारतीयोंको भी समान राजनैतिक अधिकार प्राप्त हो जायँगे, तो फिर वे समस्त संसारसे अलग रहकर इन खेतियोंपर गुलामीका जीवन न व्यतीत करेंगे, और ज़्यादा मज़दूरी तथा सुविधाएँ मांगने लगेंगे। लंकाके ये राजनीतिज्ञ स्वार्थपरतासे भरे हैं।

यदि कुछ अनहोनी बात—जिसका मुझे पता नहीं है—न हो, तो ये नियम शीघ्र ही कानूनमें परिणत हो जायँगे, और इस द्वीपके भारतीयोंका अधिकांश भाग राजनैतिक गुलामीमें ढकेल दिया जायगा, जब कि द्वीपके और सब अधिवासियोंको अंग्रेज़ों समेत—वोटका अधिकार मिल जायगा। लंकामें रहनेवाले हमारे भाइयोंमें प्रायः नौ आदमियोंमें सात आदमी अभी भी औद्योगिक गुलाम कहे जाते हैं।

यदि भारतवर्ष इस स्थितिसे अपना अपमान समझता है, तो उसे इसका क्रियात्मक प्रमाण देना चाहिये। इस मामलेमें भारतवर्षकी चुप्पीके कारण, उसकी अज्ञानता या उदासीनता—अथवा ये दोनों ही बात हैं। यह चुप्पी शक्तिकी कमीसे नहीं है। लंका अपने खाद्य-पदार्थों और मज़दूरोंके लिए इतनी बुरी तरह भारतवर्षपर निर्भर है कि यदि इस मामलेमें हमारी सरकार ज़रा भी दृढ़ता दिखलावे, तो लंकाके भारतीयोंकी औद्योगिक और राजनैतिक गुलामियां तुरन्त ही खतम हो जायें।

न्यूज़ीलैण्डका जीवन

[लेखक:—डा० बलवन्त सिंह शेर, एम० डी०, डी० पी-एच० सी० टी० एम०]

न्यूज़ीलैण्ड एक स्वराज्य-प्राप्त अंग्रेज़ी उपनिवेश है। उसका क्षेत्रफल १०२२४० वर्गमील और जन-संख्या तेरह लाखसे ऊपर है। वह कलकत्तेसे सात हज़ार मीलसे कुछ अधिक दूर होगा। कलकत्तेसे वहां तक यात्रा करनेमें चालीस दिन लगते हैं।

न्यूज़ीलैण्डमें गोरोंकी आबादी कोई बारह लाख पचहत्तर हज़ार, वहांके आदिनिवासी अर्थात् माओरियोंकी संख्या लगभग ५४०००, चीनियोंकी संख्या तीन हज़ार और भारतवासियोंकी संख्या लगभग पाँच सौ है। न्यूज़ीलैण्डके सबसे बड़े शहर आकलैण्डकी आबादी डेढ़ लाखसे कुछ अधिक है।

साधारणतया वहांका रहन-सहन यूरोपीय ढंगका है। हाँ, देहाती माओरियोंके रहन-सहनमें ज़रूर अन्तर है। मज़ेकी बात तो यह है कि माओरी, जो डील-डौलमें बड़े हृष्ट-पुष्ट हैं, आरम्भमें कोई ४५०० वर्ष पहले पंजाबसे यहाँ आये थे। वे वास्तवमें आर्य तथा गोंडाल, कनाका, कोल, कोलोरियन, भूमि और नागा जैसी भारतके आदिम निवासियोंके मिश्रित

'विशाल भारत' 1930 में न्यूज़ीलैंड से लिखा गया सबसे पहला हिंदी आलेख

हिंदी साहित्य की बात करें तो न्यूज़ीलैंड में हिंदी लेखन 1989 से हो रहा है। यह वह वर्ष था जब 'रोहित कुमार हैप्पी' की पुस्तक प्रकाशित हुई थी। 1992 में 'द इंडियन टाइम्स' में भी उनकी हस्तलिपि में हिंदी सामग्री देखी जा सकती है।

1996 से भारत-दर्शन आरंभ हुआ और बहुत से हिंदी लेखक और हिंदी प्रेमी इसके माध्यम से हिंदी मंच पर आए।

1996 के भारत-दर्शन के पहले अंक में रोहित कुमार हैप्पी की दो ग़ज़लें प्रकाशित हैं जो न्यूज़ीलैंड में प्रकाशित पहली ग़ज़लें थीं। इसी अंक में रोहित कुमार 'हैप्पी' की दो लघुकथाएँ 'दोराहा' और 'हमदर्दी' प्रकाशित हैं। इसके अतिरिक्त राजीव वाधवा की लघुकथा 'मुट्ठी' भी प्रकाशित हुई।

न्यूज़ीलैंड में जो विधाएँ सबसे पहले पनपी उनमें लघुकथा और ग़ज़लें सम्मिलित हैं। इससे ऐसा अनुमान लगाना कतई उचित नहीं कि यहाँ का लेखन केवल रिपोर्ट, लघुकथा और ग़ज़ल तक सीमित था। दरअसल पत्रिका केवल ए5 आकार व केवल 8 पृष्ठ की होने के कारण इसमें आलेख और कहानी इत्यादि को सम्मिलित करना अभी संभव नहीं था।

इधर भारत-दर्शन पत्रिका प्रकाशित होने के कुछ समय पश्चात विश्व शान्ति आश्रम की त्रैमासिक पत्रिका 'शान्ति सरोवर' में भी आंशिक रूप से हिंदी सामग्री प्रकाशित हुई थी। इस पत्रिका का सम्पादन मास्टर विनोद कर रहे थे और इस पत्रिका में उनका एक आलेख और एक कहानी प्रकाशित है। न्यूज़ीलैंड में प्रकाशित हुई उनकी कहानी **'उज्ज्वल भविष्य' को न्यूज़ीलैंड में प्रकाशित पहली कहानी होने का श्रेय** जाता है।

आरंभिक दौर में रोहित कुमार के अतिरिक्त राजीव वाधवा, पुष्पा भारद्वाज-वुड नीरू माथुर, मंजु मिश्रा, सुधा खन्ना, रूपा सचदेव, ब्रह्मकुमारी भावना, शरणदास, ब्रिज़िश इत्यादि की रचनाएँ भारत-दर्शन में देखी जा सकती हैं। वर्तमान में शारदा मोंगा, प्रीता व्यास, सोमनाथ गुप्ता, दीपक भारद्वाज की रचनाएँ भारत-दर्शन में प्रकाशित हैं।

इनके अतिरिक्त शिव भागीरथ हिंदी में लिख रहे हैं। सुमन कपूर ने 'पंजाबी शगुन गीत' हिंदी में संकलित किए हैं। वंदना अभिरुचि अपने ब्लॉग के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति कर रही हैं।

90 के दशक में **डॉ सत्येन्द्र कुमार सिंह** के हिंदी आलेख 'शान्ति दूत' नॉर्वे, गगनाञ्चल (भारत) और विश्व हिंदी पत्रिका (मॉरीशस) में प्रकाशित हैं।

सुनीता नारायण के तीन आलेख 'विश्व हिंदी पत्रिका' (मॉरीशस) में उपलब्ध हैं। उनका एक आलेख 'प्रवासी भारतीयों में हिंदी की कहानी' में भी प्रकाशित है। इसका सम्पादन 'सुरेंद्र कुमार गंभीर और वशिनी शर्मा' ने किया है।

प्रीता व्यास काफी समय से न्यूज़ीलैंड की निवासी हैं। उनके अनेक आलेख हिंदी की विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। इनकी 'माओरी लोक कथाएँ' (2018) विशेष रूप से उल्लेखनीय है। हिंदी में इनकी 11 पुस्तकें उपलब्ध हैं। आप कई वर्षों तक हिंदी रेडियो तराना के समाचार विभाग से जुड़ी रही हैं। लेखन के साथ-साथ कविता पाठ, अभिनय और मंच संचालन भी करती हैं। पूर्व में स्थानीय स्थानीय टीवी पर समाचार वाचन भी कर चुकी हैं। हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेज़ी और इंडोनेशियाई में भी पुस्तकें लिखी है। आपकी तीन द्विभाषिक (हिंदी-इंडोनेशियाई) पुस्तकें 'परचाकापन सेहारी-हारी", 'टाटा बहासा हिंदी" और 'बहासा हिंदी सेहारी-हारी' भी प्रकाशित हुई हैं। पत्रकारिता पर भी इनकी पुस्तक भारत में प्रकाशित हो चुकी है।

रोहित कुमार 'हैप्पी' के अनेक आलेख 'विश्व हिंदी पत्रिका', विश्व हिंदी सम्मेलन पत्रिका 2008 के अतिरिक्त हिंदी न्यू मीडिया की पुस्तकों, अंतरराष्ट्रीय जर्नलों, समाचारपत्र व पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। न्यूज़ीलैंड में लिखी गई पहली पुस्तक के लेखक व यहाँ के पहले हिंदी पत्रकार हैं। आपने न्यू मीडिया में नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं और इनकी संपादित ऑनलाइन भारत-दर्शन के प्रतिमास औसतन

10 लाख से भी अधिक पृष्ठ पढे जाते हैं। अपने शोध, उत्कृष्ट खोजी पत्रकारिता, लेखन और न्यू मीडिया के लिए जाने जाते हैं।

पत्रकारिता लोकतंत्र को बनाए रखती है। यह प्रगतिशील सामाजिक परिवर्तन का बल है। -एंड्रू वचसे

हिंदी विद्वान मेक्ग्रेगॉर

रोनाल्ड स्टुअर्ट मेक्ग्रेगॉर जिन्हें अधिकतर आर एस मेक्ग्रेगॉर के नाम से जाना जाता है, एक सच्चे हिंदी प्रेमी थे। मेक्ग्रेगॉर ने पश्चिमी को हिंदी से परिचित करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1929 में न्यूजीलैंड में जन्मे, स्कॉटिश माता-पिता की सन्तान प्रो. मेक्ग्रेगॉर को बचपन में फीजी से प्रकाशित हिंदी के एक व्याकरण की पुस्तक किसी ने दी थी, जिसके फलस्वरूप उनका हिंदी की ओर रूझान हो गया। सर्वप्रथम 1959-60 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी की पढ़ाई करने वे भारत आए थे।

मेक्ग्रेगॉर ने 1959-60 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी की शिक्षा ली।

1964 से लेकर 1997 तक वे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हिंदी का अध्यापन करते रहे। वे एक उच्च स्तरीय भाषा विज्ञानी, व्याकरण के विद्वान, अनुवादक और हिंदी साहित्य के इतिहासकार थे।

1972 में हिंदी व्याकरण पर 'एन आउटलाइन ऑव हिंदी ग्रामर' नाम की महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी। मेक्ग्रेगॉर का 'हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश' काफी प्रसिद्ध रहा है। हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित व स्थापित करने में आपकी महती भूमिका रही है।

मेक्ग्रेगॉर का 19 अगस्त 2013 को 84 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

अंतरराष्ट्रीय हिंदी लेखन प्रतियोगिताएँ और न्यूज़ीलैंड

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा तीन न्यूज़ीलैंड निवासियों को लघुकथा, एकाँकी और यात्रा वृतांत लेखन के लिए 'एशिया व ऑस्ट्रेलिया' (भारत के अतिरिक्त) श्रेणी के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार दिए जा चुके हैं। इसके अंतर्गत इन्हें 300 अमरीकन डालर की धनराशि व प्रमाण-पत्र दिए गए हैं।

इस प्रतियोगिता को पाँच भौगोलिक क्षेत्रों में बाँटा जाता है जिनमें अफ्रीका व मध्य पूर्व, अमेरिका, एशिया व ऑस्ट्रेलिया (भारत के अतिरिक्त), यूरोप और भारत सम्मिलित हैं। इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पाने वालों को 300, 200 और 100 अमरीकन डालर की धनराशि व प्रमाण-पत्र से पुरस्कृत किया जाता है।

विश्व हिंदी सचिवालय पिछले कई वर्षों से विभिन्न विधाओं पर ऐसी प्रतियोगिताएँ आयोजित कर चुका है जिनमें लघुकथा, एकाँकी और यात्रा वृतांत सम्मिलित हैं।

न्यूज़ीलैंड की आरती शर्मा ने 2015 की 'अंतरराष्ट्रीय हिंदी लघु-कथा प्रतियोगिता' में 'कुछ नहीं' लघुकथा के लिए प्रथम स्थान, सुनीता नारायण ने 2017 की 'अंतरराष्ट्रीय हिंदी एकाँकी प्रतियोगिता' और रोहित कुमार हैप्पी ने 2018 की 'अंतरराष्ट्रीय यात्रा वृतांत प्रतियोगिता' में प्रथम स्थान पाया। 'कुछ नहीं' लघुकथा और 'कबीर की नगरी में' यात्रा वृतांत भारत-दर्शन पर उपलब्ध है।

न्यूज़ीलैंड, ऑस्ट्रेलिया और फीजी के हिंदी लेखकों के बीच संबंध

न्यूज़ीलैंड, ऑस्ट्रेलिया और फीजी के हिंदी लेखकों के बीच कोई विशेष संवाद स्थापित नहीं है लेकिन न्यूज़ीलैंड से प्रकाशित 'भारत-दर्शन' के मध्यम से वे एक

हिंदी मंच साझा अवश्य कर रहे हैं। भारत-दर्शन पर न्यूज़ीलैंड के अतिरिक्त ऑस्ट्रेलिया और फीजी के हिंदी साहित्यकारों की पठनीय सामग्री उपलब्ध है।

ऑस्ट्रेलिया में कई लेखक-लेखिकाएँ व पत्रकार हैं। अब्बास रजा अल्वी, हरिहर झा, रेखा राजवंशी, रीता कौशल, प्रगीत कुमार, भावनाजी इत्यादि भारत-दर्शन के माध्यम से न्यूज़ीलैंड से जुड़े हुए हैं। लक्ष्मी तिवारी और हेमा पांडे भी हिंदी लेखन कर रहे हैं। पत्रकारिता में स्व॰ दिनेश श्रीवास्तव भारत-दर्शन से जुड़े रहे हैं।

फीजी के स्थापित लेखकों में पं तोताराम सनाढय, कमला प्रसाद मिश्र, डॉ विवेकानंद शर्मा, जोगिंदर सिंह कंवल, पं अयोध्या प्रसाद शर्मा, अमीचन्द, बाबू कुँवर सिंह, भगवान सिंह, प्रो सुब्रमनी, रयमन पिल्लय, एन चंद्र देव सिंह, वी. सुधाकर, राम नारायण गोविंद, डॉ नेतराम शर्मा, हरनाथ, पं रामचन्द्र शर्मा, भारत वी. मोरिस, अमरजीत कौर और चंद्रिका प्रसाद श्रीवास्तव इत्यादि के नाम सम्मिलित हैं।

फीजी के अनेक स्थापित साहित्यकारों का साहित्य ‘भारत-दर्शन’ के माध्यम से उपलब्ध करवाया गया है और नयी पीढ़ी के लेखक भी अब जुड़ रहे हैं। पं तोताराम सनाढय, पं कमला प्रसाद मिश्र, डॉ विवेकानंद शर्मा, जोगिंदर सिंह कंवल, व अमरजीत कौर की रचनाएँ भारत-दर्शन पर उपलब्ध हैं। नयी पीढ़ी में जैनन प्रसाद की रचनाएँ भारत-दर्शन पर उपलब्ध हैं।

2000 के तख़्तापलट के समय रोहित कुमार हैप्पी ‘ज़ी न्यूज़ नेटवर्क’ के लिए फीजी ‘कवर’ कर रहे थे। उसी समय से फीजी के साहित्यकारों की रचनाएँ ‘भारत-दर्शन’ पर उपलब्ध हैं। स्व॰ कमलाप्रसाद मिश्र की कई रचनाएँ ‘भारत-दर्शन’ में प्रकाशित हैं। इनकी एक रचना तो ‘भारत-दर्शन’ के तीसरे अंक (फरवरी-मार्च 1997) में भी प्रकाशित है। कमलाप्रसाद मिश्र की बहन सुधा चन्द्रा न्यूज़ीलैंड की निवासी थी।

उन्होंने मिश्र जी की हस्तलिपि में उनकी रचनाएँ ‘भारत-दर्शन’ को उपलब्ध करवाईं थीं।

कमलाप्रसाद मिश्र, जोगिंदर सिंह कंवल, डॉ विवेकानंद शर्मा, मास्टर महेन्द्र चन्द्र विनोद शर्मा की हस्तलिपि ‘भारत-दर्शन’ के पास सुरक्षित है।

फीजी की महिला लेखकों में कृष्णा कला पथिक, अमरजीत कौर, सरस्वती देवी, कुमारी जूली, ज्ञान शुक्ल, कमला सिंह, सुभाशनी लता कुमार और किरण सिंह के नाम उल्लेखनीय हैं।

फीजी में हिंदी पत्रकारिता की चर्चा हो तो शान्तिदूत की संपादिका नीलम कुमार का नाम उल्लेखनीय है। नीलम कुमार सन् 2000 से शान्तिदूत का सम्पादन कर रही हैं। नीलम कुमार को 2015 में भोपाल (भारत) में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित किया जा चुका है। आप भारत के केन्द्रीय हिंदी संस्थान से प्रशिक्षित हैं।

नीलम कुमार से पहले गुरुदयाल, महेंद्र चन्द्र विनोद, हेमन्त विमल, अशोक कुमार द्विवेदी और जग नारायण शर्मा इत्यादि ने इस पत्र का सम्पादन किया था।

फीजी तख़्ता पलट के समय ‘भारत-दर्शन’ ने फ़िजी पर एक विशेषांक निकाला था। यह अंक ‘भारत-दर्शन’ के डिजिटल पुस्तकालय में ऑनलाइन उपलब्ध है।

अनिल शर्मा ने 2015 से 2019 के बीच फिजी के चांसरी प्रमुख और द्वितीय सचिव (हिंदी एवं सामुदायिक मामले) के रूप में कार्यरत रहते हुए हिंदी प्रचार-प्रसार के अनेक प्रयास किए जिनमें फीजी, न्यूज़ीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच संवाद स्थापित करने का प्रयास भी सम्मिलित था। एक क्षेत्रीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन के आयोजन की योजना भी बनाई गई लेकिन कुछ कारणों से यह संभव नहीं हो पाया।

प्रशांत में अनिल शर्मा का हिंदी के प्रति समर्पण और अपने कार्यकाल के दौरान उनकी सक्रियता की सराहना की जाती रही है। इससे पूर्व सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) में 4-5 फरवरी 2006 को एक क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन आयोजित किया गया था।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद, भारत और न्यूज़ीलैंड

1950 में हिंदी साहित्यकार सेठ गोविंद दास के पश्चात 1997 में पहली बार 'भानुप्रताप शुक्ल' सरीखा कोई हिंदी का साहित्यकार न्यूज़ीलैंड आया था। भानुप्रताप शुक्ल अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद के सदस्य के रूप में आए थे। उनके हिंदी भाषण रोचक थे जो हर स्थान पर जनसमुदाय को भाए। स्व॰ भानुप्रताप शुक्ल ने मासिक 'राष्ट्रधर्म', साप्ताहिक 'पाञ्चजन्य' और हिंदी दैनिक 'तरुण भारत' का सम्पादन किया था।

फरवरी 1997 में अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद (भारत) ने परिषद के महासचिव स्व॰ बालेश्वर अग्रवाल के नेतृत्व में न्यूज़ीलैंड का दौरा किया। उन्होंने ऑकलैंड, वैलिंग्टन और हैमिल्टन का दौरा किया।

'भारत-दर्शन' स्व॰ बालेश्वर अग्रवाल की 'युगवार्ता' हिंदी फ़ीचर सेवा के माध्यम 1988 से जुड़े हुए थे। जब अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद के सदस्य न्यूज़ीलैंड आए तो ऑकलैंड में भारत-दर्शन ने ऑकलैंड इंडियन एसोसिएशन के सहयोग से सभी आयोजन किए। सभी आयोजन हिंदी में हुए थे। उस समय कानुभाई पटेल एसोसिएशन के प्रधान थे और उन्होंने भरपूर सहयोग दिया। डॉ राजेन प्रसाद (पूर्व रेस रिलेशन कौंसिलिएटर) भी इन अतिथियों की मेज़बानी करनेवालों में से एक थे। व्यक्तिगत तौर पर दिनेश पाहूजा ने सहयोग दिया। हैमिल्टन में दुग्गल परिवार ने काफी सहयोग किया।

उधर वैलिंग्टन में डॉ॰ पुष्पा भारद्वाज-वुड व भारतीय उच्चायोग ने अतिथियों की देखभाल की।

न्यूज़ीलैंड में हिंदी कवि सम्मेलन और मुशायरा

न्यूज़ीलैंड की 'उर्दू हिंदी कल्चरल एसोसिएशन ऑफ़ न्यूज़ीलैंड' पिछले कई वर्षों से हिंदी कवि सम्मेलन और मुशायरे का आयोजन करती हैं। सितंबर 2011 में इस संस्था का गठन हुआ लेकिन ये लगभग 2009 से कवि सम्मेलन और मुशायरे का आयोजन कर रहे हैं। मुजीब सैयद इस संस्था के संस्थापक सदस्यों में मुख्य थे। हिंदी कवि-सम्मेलन का संचालन प्रीता व्यास करती हैं। इस समय इस संस्था के सचिव मुजीब सैयद और अध्यक्षा 'रूपा सचदेव' हैं। मुजीब सैयद तेलंगाना से प्रकाशित 'द सियासत डेली' से जुड़े हुए हैं।

न्यूज़ीलैंड का पहला कवि सम्मेलन व मुशायरा 'द इंडियन टाइम्स' द्वारा 8 अगस्त 1993 को में ऑकलैंड के 'माँट रॉस्कल वॉर मेमोरियल' हाल में हुआ था। इसके कवि सम्मेलन का संचालन रोहित कुमार 'हैप्पी' और मुशायरे का संचालन मास्टर नफीस अख्तर ने किया था।

2015 में न्यूज़ीलैंड की 'आर्य एंटरटेनमैंट' ने कुमार विश्वास का सफल मंचीय कार्यक्रम आयोजित किया। कुमार विश्वास ने अनेक हिंदी रचनाएँ पढ़ी। हिंदी रेडियो तराना की 'महक वशिष्ठ' ने कुमार विश्वास का हिंदी में साक्षात्कार किया जो यूट्यूब पर उपलब्ध है।

पूर्व मनोनीत सांसद 'महेश बिंद्रा' ने ऑकलैंड में अनेक बार हिंदी कवि सम्मेलनों और उर्दू मुशायरों की अध्यक्षता की है। न्यूज़ीलैंड के तीन अन्य मनोनीत सांसद कंवलजीत सिंह बख्शी, डॉ परमजीत परमार और प्रियंका राधाकृष्णन भी इन आयोजनों में उपस्थित होकर अपनी सक्रिय भागीदारी करते रहे हैं।

अक्तूबर 2019 में उर्दू हिंदी कल्चरल एसोसिएशन ऑफ़ न्यूज़ीलैंड ने “सफ़ेद बादलों के देश में” पुस्तक का लोकार्पण समारोह आयोजित किया। इस संग्रह का विमोचन भारतीय मूल के मनोनीत सांसद कंवलजीत सिंह बख्शी ने ऑकलैंड में किया। इस अवसर पर एसोसिएशन के सदस्यों के अतिरिक्त एसोसिएशन के सचिव ‘सैयद मुजीब’ और अध्यक्षा ‘रूपा सचदेव’ उपस्थित रहे। यह पुस्तक न्यूजीलैंड के तीन भारतीय कवियों का संग्रह है। इस पुस्तक में रोहित कुमार हैप्पी, सोमनाथ गुप्ता ‘दीवाना रायकोटी’ और दिनेश भारद्वाज की रचनाएँ सम्मिलित हैं। विभिन्न कवियों की रचनाओं वाला यह संग्रह अपनी तरह का पहला काव्य संग्रह है। इस अवसर पर उपस्थित कवियों ने अपनी रचनाएँ भी पढ़ीं।



इस पुस्तक का सम्पादन प्रीता व्यास ने किया है और यह पुस्तक भारत के बोधि प्रकाशन द्वारा प्रकाशित की गई है। एसोसिएशन के सचिव सैयद मुजीब ने इस

प्रकाशन पर प्रसन्नता जताते हुए कवियों और संपादिका का शुभकामनाएँ प्रकाशन पर खुशी व्यक्त की।

भारतीय मूल की मनोनीत सांसद, 'डॉ *परमजीत परमार*' भी हिंदी से जुड़ी रही हैं। 2017 में दूसरी बार सांसद मनोनीत होने से पूर्व आप वर्षों तक हिंदी रेडियो से जुड़ी रही हैं। उन्होंने रेडियो देस-परदेस और बाद में रेडियो तराना पर कई वर्षों तक काम किया।

सामुदायिक पत्रकारिता के अन्य उत्तरदायित्व

सामुदायिक पत्रकारिता में आपका दायरा केवल पत्रकारिता तक ही सीमित न रहकर सामाजिक क्रियाकलापों तक जा पहुंचता है। आपको पत्रकारिता के अतिरिक्त सामाजिक और सांस्कृतिक उत्तरदायित्वों का भी निर्वाह करना होता है। सामुदायिक पत्रकारिता में अपनी क्षमतानुसार सांस्कृतिक व सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए सफल सहयोगी की भूमिका से ही समाज की उन्नति संभव है। इन्हीं उत्तरदायित्वों का सफल वहन करते हुए 90 के दशक में भारत-दर्शन ने कई आयोजन किए, हिंदी शिक्षण हेतु ऑनलाइन हिंदी शिक्षक विकसित किया, हिंदी फॉन्ट विकसित किया। वर्तमान में डिजिटल पुस्तकालय के अतिरिक्त, ऑनलाइन ई-स्लेट, वाणी से टंकण व एक ही स्थान पर अनेक भारतीय भाषाओं में टंकण की सुविधा उपलब्ध करवाई है।

न्यूज़ीलैंड का दीवाली मेला, हिंदी और भारत-दर्शन

पहली बार न्यूजीलैंड में 'दीवाली मेले' का आयोजन 1998 में महात्मा गांधी सेंटर में 'भारत-दर्शन' व एक गैर-भारतीय न्यूजीलैंडर के सह-आयोजन से आरम्भ हुआ जो बाद में इतना प्रसिद्व हुआ कि ऑकलैंड सिटी कौंसिल ने इसके प्रबंधन की जिम्मेवारी स्वयं उठा ली। 'भारत-दर्शन' के इस मेले के आयोजन का ध्येय हिंदी व अन्य भाषाओं का प्रचार करना था। सांस्कृतिक कार्यक्रम, दीवाली पूजन व स्टाल

एक साथ - यह अपनी तरह का अनोखा आयोजन था और इसकी ख़ूब सराहना हुई। हिंदी में पोस्टर व बैनर लगाए गए। अगले वर्ष पुन: 1999 में इसका आयोजन महात्मा गांधी सेंटर में हुआ व अगले कुछ वर्षों तक इसका आयोजन महात्मा गांधी सेंटर में होने के पश्चात अन्य एशियन संस्था व सिटी कौंसिल ने इसके प्रबंधन की जिम्मेवारी ले ली।

1998 में भारत-दर्शन द्वारा आरंभ किया गया 'दीवाली' आयोजन आज न्यूज़ीलैंड की संसद में मनाया जाता है। इसके अतिरिक्त ऑकलैंड व वैलिंग्टन में सार्वजनिक रुप से स्थानीय-सरकारों द्वारा दीवाली मेले आयोजित किए जाते हैं।

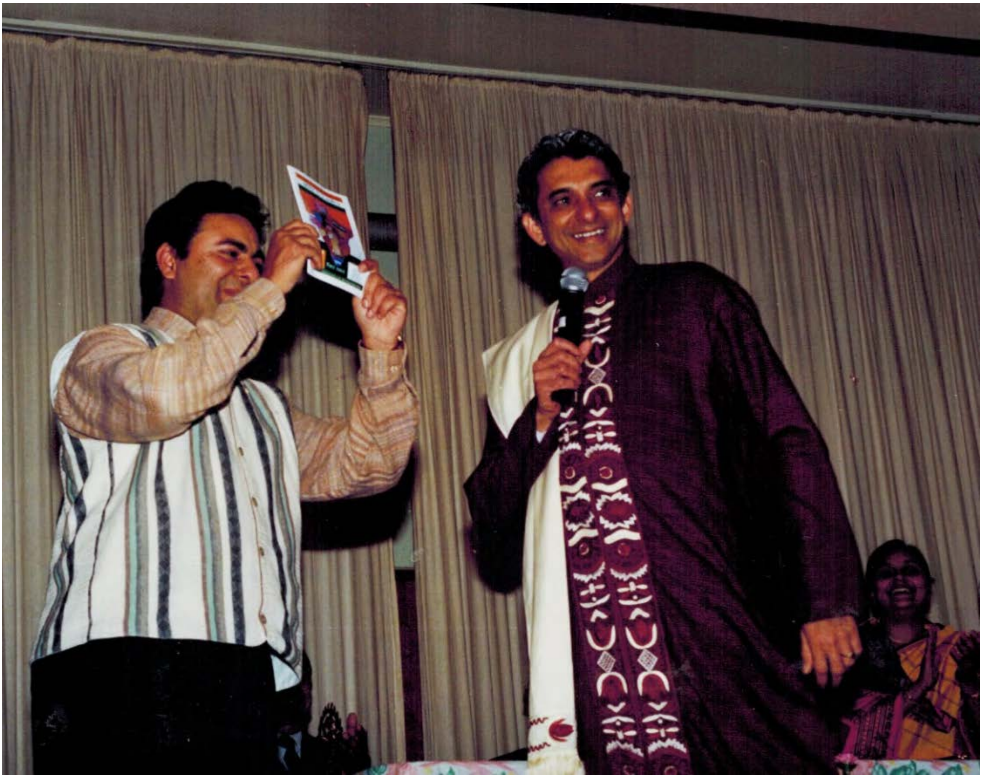
सभी भारतीयों को एक मंच पर लायी हिंदी पत्रिका

अगस्त '97 आते-आते 'भारत-दर्शन ' पत्रिका अत्यधिक लोकप्रिय हो गई थी। भारत-दर्शन की गतिविधियां भी बढ़ गईं थीं। अभी तक यहाँ भारतीय समुदाय बंटा हुआ था। भारत का 'स्वतंत्रता-दिवस' व 'गणतंत्र-दिवस' भी मिलजुल कर आयोजित नहीं होता था। 1997 में 'भारत-दर्शन' ने पहली बार सभी भारतीयों को भारतीय स्वतंत्रता दिवस के 'स्वर्ण जयंती समारोह' में एक मंच प्रदान किया। इससे पहले केवल गुजराती समुदाय ही 'स्वतंत्रता-दिवस' मनाता था और सारा कार्यक्रम गुजराती में ही होता था। 1997 में न्यूज़ीलैंड में रह रहे सभी समुदाय एक मंच पर आए और समारोह हिंदी में हुआ। इसमें मुख्य अतिथि भारतीय उच्चायुक्त के.एम मीणा व विशिष्ट अतिथि 'डॉ राजेन प्रसाद' न्यूज़ीलैंड के रेसरिलेशंस कौंसिलिएटर थे।

> सूचनाओं के लोकतांत्रिकरण के कारण पत्रकारिता में जबरदस्त बदलाव आया है। कोई भी व्यक्ति इंटरनेट पर कुछ भी डाल सकता है। सत्य क्या है, इसका पता लगाना अब और भी कठिन हो गया है। -रॉबर्ट रेडफोर्ड


न्यूज़ीलैंड के भूतपूर्व रेस रिलेशंस कौंसिलिएटर 'डॉ राजेन्द्र प्रसाद' और भारत के निर्वर्तमान उच्चायुक्त 'श्री के. एम. मीणा' अगस्त 1997 में भारत की स्वतंत्रता की स्वर्ण-जयंती व भारत-दर्शन की पहली वर्षगांठ पर

इस अवसर पर भारत-दर्शन का 'स्वतंत्रता-विशेषांक' प्रकाशित किया गया। भारत-दर्शन का यह अंक श्वेत-श्याम न होकर रंगीन था व इसके 16 पृष्ठ थे।



अगस्त 1997 में भारत की स्वतंत्रता की स्वर्ण-जयंती व भारत-दर्शन की पहली वर्षगांठ पर भारत-दर्शन के संपादक 'रोहित कुमार 'हैप्पी' व एशिया डायनामिक टीवी कार्यक्रम के 'भारत जमनादास' भारत-दर्शन का स्वतंत्रता-दिवस विशेषांक प्रदर्शित करते हुए।

इस अवसर पर हिंदी सेवियों व समाज सेवियों का सम्मान किया गया। चित्र-कला की प्रदर्शनी लगाई गई जिसे भारतीयों के अतिरिक्त स्थानीय लोगों ने भी सराहा।

> और मेरा मानना है कि अच्छी पत्रकारिता, अच्छा टेलीविजन, हमारी दुनिया को एक बेहतर जगह बना सकता है। -क्रिस्टियन अमनपुर

न्यूज़ीलैंड की अन्य हिंदी वैब साइट

भारत-दर्शन के अतिरिक्त कुछ अन्य वैब साइट भी अपनी उपस्थिति दर्ज करवा चुकी हैं।

कहत-कबीर पर कबीर का समग्र साहित्य प्रकाशित करने की योजना है। इसमें मुद्रित सामग्री, चित्र व वीडियो सम्मिलित होंगे। कबीर की जीवनी, उनके दोहे, भजन व प्रचलित किंवदंतियां प्रकाशित की जा चुकी है। हम निरंतर इसमें और सामग्री सम्मिलित कर रहे हैं।

इस वैब साइट का उद्देश्य कबीर साहित्य प्रचारित करना है।



भारत-दर्शन की कबीर पर नई विकसित साइट

http://www.kahatkabir.com/

‘टेलटाउन

राजीव वधवा ‘टेलटाउन’ नाम से अपनी वैब साइट चलाते हैं। यह साइट मूलत: अंग्रेज़ी में है लेकिन इसमें यदि आप हिंदी पृष्ठ देखें तो काफी सामग्री उपलब्ध है।

ब्लॉग

वंदना अभिरुचि वैलिंग्टन से अपना हिंदी ब्लॉग, ‘मैं और मेरी अभिरुचि' संचालित करती हैं। कविता, व्यंग्य और कहानियाँ लिखती हैं। वंदना दिल्ली विश्वविद्यालय से पत्रकारिता में स्नातकोत्तर हैं और उन्हें ‘स्क्रिप्ट’ लिखने का भी अनुभव है।

ऑनलाइन हिंदी साहित्यकार चित्र-दीर्घा

डिजिटल चित्र, पारंपरिक चित्र व छायाचित्रों की एक दीर्घा का विकास जिसमें सभी हिंदी साहित्यकारों के चित्र देखे जा सकें, हमारी भावी योजनाओं में सम्मिलित है।

पत्रिका ने अपने वैब पृष्ठ के माध्यम से अनुरोध किया है--“भारत-दर्शन की भावी योजनाओं के माध्यम से हिंदी प्रचार-प्रसार में यदि आप हमारे साथ जुड़ना चाहें तो आपका स्वागत है। अब आवश्यकता है कि हम निजी प्रयासों को एक नया रूप देते हुए संयुक्त प्रयास आरंभ करें। वैश्विक-ग्राम (Global Village) के आज के इस समय में यह सब संभव है। हम सबके संयुक्त प्रयासों से ही हिंदी आगे बढ़ेगी।“

न्यूज़ीलैंड का भारतीय उच्चायोग और हिंदी

न्यूज़ीलैंड का उच्चायोग यथासंभव हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी भूमिका निभाता आया है। उच्चायोग शैक्षणिक सामग्री उपलब्ध करवाने, हिंदी से संबंधित सूचनाओं के आदान-प्रदान, स्थानीय संस्थाओं व भारतीय सरकार के बीच संवाद स्थापित

करने और हिंदी के आयोजनों में अपनी भागीदारी करता है। अपने कार्यकाल के दौरान कई भारतीय उच्चायुक्तों ने व्यक्तिगत तौर पर भी हिंदी को प्रोत्साहित किया है।



रोहित कुमार हैप्पी और भारत के उच्चायुक्त मुक्तक परदेशी

वर्तमान उच्चायुक्त ने अपना पदभार सँभालते ही अपनी सक्रियता दिखायी। उन्होंने विभिन्न हिंदी संस्थाओं से संवाद किए और हिंदी से जुड़े लोगों से संपर्क साधकर हिंदी की प्रगति की आशा जगायी है।

ऑकलैंड में 2017 में भारत का वाणिज्य दूतावास खुलने पर मानद कौंसल भाव ढिल्लो संस्थाओं और सरकार के बीच संवाद स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। वे हिंदी आयोजनों में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

भारत-दर्शन 90 के दशक से भारतीय उच्चायोग का सशक्त सहयोगी रहा है। 1997 में भारत के स्वतंत्रता स्वर्ण जयंती समारोह, फिल्म उत्सव, प्रदर्शनी व सांस्कृतिक आयोजनों में 'भारत-दर्शन' भागीदार रहा है।

हिंदी का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। किसी समाज की उन्नति के लिए आवश्यक है कि हम एकजुट होकर काम करें। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार का शोध अध्ययन करें तो पाएंगे कि हिंदी की प्रगति का जितना प्रचार होता है यथार्थ के धरातल पर उसका आंशिक कार्य भी नहीं होता। राजनीति में साहित्य आना उसकी उन्नति करता है और साहित्य में राजनीति आना उसकी अधोगति। दलगत राजनीति से ऊपर उठकर देश और समाज का उद्धार करें।

भारतीय उच्चायोग हिंदी के मौन साधकों को भी अपना सहयोगी बनाए जो निस्वार्थ हिंदी की सेवा कर रहे हैं। उन दिवंगत हिंदी सेवियों और साधकों का भी समुचित सम्मान हो जो हमारे बीच नहीं है। सत्साहित्य और मानक भाषा को मान्यता दिया जाना भी आवश्यक है। यदि पत्रकारिता व शिक्षण से जुड़े हुए लोगों और संस्थाओं की अपनी भाषा ही सही और मानक नहीं होगी तो हिंदी की प्रगति में उनकी भूमिका विश्वसनीय नहीं हो सकती। इस विषय में उच्चायोग की भूमिका वांछनीय है।

भारतीय हाई कमिश्नर
वैलिंग्टन (न्यूज़ीलैण्ड)
High Commissioner for India
WELLINGTON (New Zealand)

1st May, 1998

WHOMSOEVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Shri Rohit Kumar 'Happy', resident of Auckland, New Zealand, has actively associated himself with organizing Indian community events during my tenure of duty (1994-1998) in New Zealand. He has also helped the High Commission in putting up Exhibition/film shows related to celebrations of 50th year of India's Independence. He is a young man with enormous enthusiasm and capacity to organize events, particularly to promote Indian culture in New Zealand. His devotion to a Hindi publication entitled 'Bharat Darshan' in New Zealand is exemplary and he needs all possible encouragement and even assistance in continuing with this. I wish him the best in his life.

With kind regards,

(K.M. Meena)

180 Molesworth Street
PO Box 4045
Telex HICOIND NZ31676
Phone (04) 473 6390/91
Fax (04) 499 0665
Email: hicomind@clear.net.nz

भारत-दर्शन और भारतीय उच्चायोग का आपसी सहयोग

सनद रहे

- भारतीयों का पहला पत्र 'आर्योदय' गुजराती में 1921 में प्रकाशित हुआ था।
- न्यूज़ीलैंड के किसी भारतीय द्वारा पहला आलेख 1930 में भारत की लोकप्रिय पत्रिका ‘विशाल भारत’ में प्रकाशित हुआ था।
- न्यूज़ीलैंड के बारे में लिखी गई पहली पुस्तक 1950 में भारत से आधिकारिक दौरे पर आए हिंदी साहित्यकार सेठ गोविंददास ने लिखी थी। ‘सुदूर दक्षिण पूर्व’ नामक यह पुस्तक उन्होंने न्यूज़ीलैंड, फीजी और ऑस्ट्रेलिया की यात्रा पर लिखी थी।
- न्यूज़ीलैंड के किसी भारतीय मूल के लेखक की पहली पुस्तक 1989 में प्रकाशित, ‘दूसरा रुख़’ थी।
- ‘एक्सेस कम्युनिटी रेडियो’ हिंदी का प्रसारण करने वाला पहला रेडियो था।
- न्यूज़ीलैंड में आंशिक हिंदी लेखन 1992 में हस्तलिपि से आरंभ हुआ।
- न्यूज़ीलैंड से प्रकाशित सबसे पहली हिंदी पत्रिका ‘भारत-दर्शन’ थी जो 1996 में प्रकाशित हुई थी।
- मार्च 2005 से जून 2008 के बीच 'कूक हिंदी समाचार' न्यूज़ीलैंड का पहला हिंदी समाचार पत्र था।
- न्यूज़ीलैंड में नियमित हिंदी लेखन 1996 से आरंभ हुआ।
- भारत-दर्शन 1996-97 में इंटरनेट पर प्रकाशित होने वाला विश्व का सबसे पहला हिंदी प्रकाशन था।
- भारत-दर्शन के प्रति मास औसतन 10 लाख से भी अधिक पृष्ठ ऑनलाइन पढ़े जाते हैं। यह पत्रिका लंबी अवधि से विश्व की सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली ऑनलाइन साहित्यिक पत्रिका है।
- हिंदी न्यूज़ीलैंड में सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषाओं में से एक है।

जरा सोचिए

न्यूज़ीलैंड छोटा सा देश है लेकिन हिंदी पत्रकारिता विशेषतः वैब पत्रकारिता में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। इंटरनेट ने जहाँ हमें बहुत कुछ दिया है, वहीं यह भ्रांतियों का पोषक और निर्माता भी है। वर्तमान में हिंदी पत्रकारिता में सबसे बड़ी त्रुटि 'कथ्य' को 'तथ्य' मान लेना और इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री का बिना जाँचे-परखे उपयोग करना है। न्यूज़ीलैंड हिंदी न्यू मीडिया में अग्रणी है। वैब पर हिंदी ख़ूब फल-फूल रही है लेकिन इसकी वैब उपस्थिति की गुणवत्ता में अभी बहुत सुधार की आवश्यकता है।

यह विचारणीय है कि भारत में करोड़ों इंटरनेट उपभोक्ता होने पर भी भारत की कोई भी भाषा इंटरनेट पर उपयोग की जाने वाली भाषाओं में अपना स्थान नहीं रखती। मुख्य हिंदी की वैब साइटस के लाखों पाठक हैं फिर भी हिंदी का कहीं स्थान न होना, किसी भी हिंदी प्रेमी को सोचने को मजबूर कर देगा कि आखिर ऐसा क्यों है? हमें बहुत से प्रश्नों के उत्तर खोजने होंगे और इनके समाधान के लिए ठोस कदम उठाने होंगे। हमारा प्रयास है कि हम हिंदी वैब कि इन बाधाओं पर काम करें और हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं को उनका यथोचित स्थान दिलाने में सफल हों। निःसंदेह यह संभव है। आवश्यकता इस बात कि है कि हम हिंदी वैब पत्रकारिता की तकनीकी बारीकियों को समझें और अपनी गुणवत्ता पर ध्यान दें। यदि हम इस विषय में किसी प्रकार भी किसी व्यक्ति विशेष, संस्था या संगठन के लिए किंचित भी कुछ कर पाएँ तो हमें प्रसन्नता होगी।

लेखक इंटरनेट पर विश्व के सबसे पहले हिंदी प्रकाशन 'भारत-दर्शन' (हिंदी साहित्यिक पत्रिका) के संपादक हैं।

संदर्भ:

शेर बलवन्त सिंह. (1930, January). न्यूज़ीलैंड का जीवन. (चतुर्वेदी बनारसीदास, Ed.) विशाल भारत, 5 , 36–40 .

आदर्श प्रकाशन. (1951). सुदूर दक्षिण पूर्व (1 , Vol. 1). जबलपुर , म प्र.

सहाय कैलाश कुमारी. (1994). प्रवासी भारतीयों की हिंदी-सेवा (1st ed.). दिल्ली: अविराम प्रकाशन.

शर्मा एम सी विनोद. (1994). अनमोल रत्न (1st ed., Vol. 1). सूवा, फीजी: फीजी हिंदी साहित्य समिति.

वर्मन पूर्णिमा. (2002). विश्वजाल पर प्रवासियों की अभिव्यक्ति. गगनांचल (Vol. 4, pp. 34–37). नई दिल्ली , दिल्ली : भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद .

बोधि प्रकाशन. (2019). सफ़ेद बादलों के देश में (1st ed., Vol. 1). जयपुर, राजस्थान.

Indians in New Zealand: studies of a sub-culture, Kapil Tiwari - Price Milburn for the New Zealand Indian Central Association – 1980.

हिंदी दिवस 2018 पर विशेष: हजार सालों में खूब समृद्ध हुई हिंदी. (2018, September 14). Retrieved November 1, 2019, from https://www.livehindustan.com/blog/shabd/story-hindi-diwas-2017-know-all-about-thousands-of-years-of-hindi-1508868.html.

शुक्ल रवि. (2017, March 16). अध्यक्षीय उद्बोधन; प्रयत्न फाउंडेशन ऑफ इंडिया, नागपुर. Retrieved October 17, 2019, from https://prayatnfoundation.wordpress.com/2017/03/16/अध्यक्षीय-उद्बोधन/.

Online Hindi Journals and Magazines. (n.d.). Retrieved November 15, 2019, from http://guides.library.ubc.ca/c.php?g=307090&p=2048675.

हिंदी की प्रगति के लिए तकनीक का उपयोग करें

'न्यूज़ीलैंड की हिंदी पत्रकारिता' ई-बुक पढ़ने के लिए
उपरोक्त क्यू आर (QR) स्कैन करें

'डिजिटल पुस्तकालय के लिए उपरोक्त
क्यू आर (QR) स्कैन करें

भारत-दर्शन पत्रिका पढ़ने के लिए
उपरोक्त क्यू आर (QR) स्कैन करें

पत्रकारिता का एकमात्र लक्ष्य सेवा होना चाहिए। अख़बार व प्रैस एक बड़ी ताकत है, लेकिन जैसे अनियंत्रित जल-प्रवाह में गांव के गांव डूब जाते हैं, फसलें बर्बाद हो जाती हैं, उसी तरह अनियंत्रित लेखनी सेवा करने की बजाए विध्वंस का काम करती है। - महात्मा गांधी



लेखक परिचय

रोहित कुमार 'हैप्पी' हिंदी न्यू मीडिया के विशेषज्ञ हैं, जिन्होंने भारत-दर्शन के रूप में इंटरनेट पर विश्व का पहला हिंदी प्रकाशन दिया। हमारे लिए गर्व की बात है कि हिंदी वेब-पत्रकारिता न्यूज़ीलैंड से आरंभ हुई। रोहित कुमार 'हैप्पी' न्यू मीडिया के माध्यम से हिंदी भाषा, लेखन व साहित्य के प्रचार-प्रसार हेतु प्रयासरत हैं। रोहित मैस्सी यूनिवर्सिटी, न्यूज़ीलैंड से पत्रकारिता में प्रशिक्षित हैं व इसके अतिरिक्त आप न्यूज़ीलैंड से इंवेस्टिगेटिव सर्विसिस, ग्राफिक्स व वेब डिवेलपमेंट में भी प्रशिक्षित हैं। विशेष रूप से अपनी वेब पत्रकारिता व खोजी पत्रकारिता के लिए जाने जाते हैं।

हिंदी में पत्रकारिता के अतिरिक्त आप कविता, ग़ज़ल, कहानी, लघु-कथा और आलेख लिखते हैं। आपकी रचनाएं आउटलुक, नई दुनिया, पाञ्चजन्य, ज़ी न्यूज़, वेब दुनिया, पंजाब केसरी, वीर प्रताप, हरिगंधा, शांति दूत, सृजन-गाथा, प्रभा साक्षी, अभिव्यक्ति के अतिरिक्त न्यूज़ीलैंड की स्कूप, वायकाटो टाइम्स, संडे स्टार, इंडियन टाइम्स, एशियन मैग्ज़ीन में प्रकाशित हुई हैं। रोहित कुमार 'वॉयस ऑव अमेरिका', 'डायचे वेले' पर वार्ताओं में सक्रिय रहे हैं और ९० के दशक में न्यूज़ीलैंड में 'कम्युनिटी' रेडियो (सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रम से सम्मानित), रेडियो देस-प्रदेस, रेडियो तराना पर समाचार वाचक रहे हैं।

रोहित न्यूज़ीलैंड से प्रकाशित इंटरनेट पर विश्व की पहली हिंदी पत्रिका, 'भारत-दर्शन' का संपादन व प्रकाशन करते हैं व निरंतर हिंदी-कर्म में अग्रसर हैं। यह पत्रिका १९९६-९७ से इंटरनेट पर प्रकाशित हो रही है।

Bharat-Darshan Publications
2/156 Universal Drive, Henderson
Auckland-0610, New Zealand
https://www.bharatdarshan.co.nz